



राष्ट्र को एक सूत्र में बांधते हैं हम

# भारत श्री

राष्ट्रीय हिंदी साप्ताहिक

सोमवार, 13 अक्टूबर 2025 • वर्ष 7 • अंक 12 • मूल्य: 5 रुपए

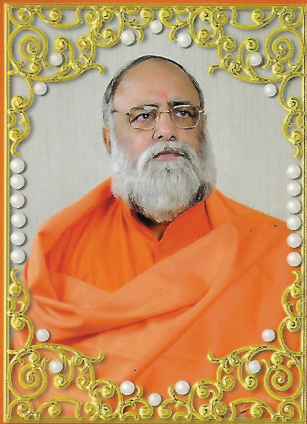
तेजस्वी की विरासत पर पीके की चुनौती



मां दुर्गा की महा कृपा के अद्भुत अनुभव

पेज-10-11

सद्गुरु वाणी



दिव्य पाठ प्रभु कृपा का वह आलोक है जिसे करने के लिए किसी भी प्रकार की कठिन तपस्या या साधना की कोई जरूरत नहीं है। यह बड़ा सहज और सरल है।

विश्व भर में होने वाले प्रभु कृपा दुख निवारण समागम केवल प्रभु की कृपा से संभव होते हैं। इसका आयोजन कोई व्यक्ति नहीं करता।

परमात्मा की नजर में सभी भाई-बहन बराबर हैं। परमात्मा जाति, धर्म, देश, सम्प्रदाय से पार है। हमें सभी भाई-बहनों को समान दृष्टि से देखना चाहिए।



## दिल्ली-एनसीआर में दीवाली पर ग्रीन पटाखों की वापसी

### सुप्रीम कोर्ट ने दी अनुमति, जानें नियम और शर्तें

@ भारतश्री ब्यूरो

इस साल दीवाली पर दिल्ली-एनसीआर के लोगों को सुप्रीम कोर्ट से एक बड़ी राहत मिली है। कोर्ट ने ग्रीन पटाखों की बिक्री और उपयोग की अनुमति दी है, लेकिन इसके लिए कुछ कड़े नियम और शर्तें तय की हैं। मुख्य न्यायाधीश बी.आर. गवई की अध्यक्षता वाली पीठ ने यह आदेश दिया कि ग्रीन पटाखों की बिक्री 18 से 20 अक्टूबर 2025 तक केवल अधिकृत स्थानों पर होगी। इन पटाखों में QR कोड होना अनिवार्य होगा, और केवल वे पटाखे ही बेचे जा सकेंगे जो CSIR-NEERI और PESO द्वारा प्रमाणित हों। साथ ही, इन पटाखों की बिक्री केवल लाइसेंसी विक्रेताओं के माध्यम से की जाएगी। कोर्ट ने यह भी स्पष्ट किया कि दिल्ली-एनसीआर के बाहर से पटाखों की बिक्री पर पूरी तरह से रोक रहेगी। यदि कोई उल्लंघन पाया गया, तो संबंधित विक्रेता का लाइसेंस रद्द कर दिया जाएगा।

#### पटाखे जलाने के लिए समय सीमा

दीवाली के दिन, यानी 20 अक्टूबर 2025 को, ग्रीन पटाखे जलाने की अनुमति सुबह 6 से 7 बजे और शाम 8 से 10 बजे तक होगी। कोर्ट ने यह आदेश दिया है कि इन समय सीमाओं का पालन करना अनिवार्य होगा। इसके अलावा, पटाखों की गुणवत्ता की जांच के लिए नियमित रूप से सैंपल लिए जाएंगे और उनकी रिपोर्ट PESO को भेजी जाएगी।

#### ग्रीन पटाखे क्या होते हैं?

ग्रीन पटाखे पारंपरिक पटाखों के मुकाबले कम

प्रदूषण फैलाते हैं। इनमें हानिकारक रसायनों की मात्रा कम होती है और ये कम ध्वनि उत्पन्न करते हैं। CSIR-NEERI और PESO ने मिलकर इन पटाखों को विकसित किया है ताकि पर्यावरण पर कम से कम प्रभाव पड़े। सुप्रीम कोर्ट का यह निर्णय दीवाली के त्योहार को सुरक्षित और पर्यावरण के अनुकूल बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

हालांकि, यह अनुमति अस्थायी है और इसके लिए निर्धारित नियमों का पालन करना आवश्यक होगा। यदि आप ग्रीन पटाखों की खरीदारी और उपयोग करना चाहते हैं, तो सुनिश्चित करें कि आप केवल प्रमाणित विक्रेताओं से ही पटाखे खरीदें और निर्धारित समय सीमा का पालन करें। इससे न केवल आप अपने त्योहार को सुरक्षित और आनंदमय बना सकेंगे, बल्कि पर्यावरण की रक्षा में भी योगदान देंगे।

#### पुराने बैन का असर

कोर्ट ने पिछली सुनवाई में पूछा था कि 2018 में पटाखों पर बैन के बाद AQI (वायु गुणवत्ता सूचकांक) में क्या फर्क पड़ा। सरकार ने बताया कि खास असर नहीं दिखा। इसका मतलब है कि सिर्फ पटाखों पर रोक लगाने से प्रदूषण में ज्यादा कमी नहीं आई, इसलिए कोर्ट ने ग्रीन पटाखों की इजाजत दी। दिल्ली-एनसीआर में केवल दिल्ली ही नहीं, बल्कि हरियाणा के 14 जिले भी शामिल हैं। यह करीब 70% क्षेत्र है जो पहले बैन से प्रभावित था। इसलिए कोर्ट ने यह सोचा कि सिर्फ पटाखों को रोकना संतुलित उपाय नहीं है। सुप्रीम कोर्ट ने स्पष्ट किया कि उत्सव की भावना और पटाखा उद्योग से जुड़े लोगों के

हित का भी ध्यान रखना जरूरी है। इसलिए अनुमति दी गई, लेकिन केवल ग्रीन पटाखों और लाइसेंसी विक्रेताओं के लिए। साथ ही केवल NEERI और PESO लाइसेंस वाले उत्पादक ही पटाखे बेच सकते हैं। पटाखे के हर पैकेज में QR कोड होना जरूरी है। गलत या गैरकानूनी पटाखे बेचने पर कार्रवाई होगी।

#### पर्यावरण पर असर

ग्रीन पटाखे पारंपरिक पटाखों की तुलना में कम धुआं और कम ध्वनि उत्पन्न करते हैं। यह कदम पर्यावरण संरक्षण की दिशा में भी महत्व रखता है। कोर्ट ने पुलिस और पेट्रोलिंग टीम को निर्देश दिया कि वे पटाखों की बिक्री और उपयोग की निगरानी करें। सैंपल जांच के बाद ही पैकेज बाजार में बेचे जाएंगे। पटाखे जलाने की इजाजत केवल सुबह 6-7 बजे और शाम 8-10 बजे तक है। केवल 18 से 20 अक्टूबर के बीच पटाखे बेचने और जलाने की अनुमति।

#### त्योहार और समाज पर असर

कोर्ट ने यह भी ध्यान रखा कि लोगों का त्योहार प्रभावित न हो और परिवार और बच्चों को भी पटाखों का आनंद मिले। इस फैसले के बाद सोशल मीडिया पर उत्साह देखा गया, लोग ग्रीन पटाखों के लिए उत्साहित हैं। कई लोग इसे त्योहार की खुशियों को सुरक्षित तरीके से मनाने की दिशा में एक अच्छा कदम मान रहे हैं। INCT और केंद्र सरकार ने कोर्ट से अनुरोध किया था कि लोगों और उद्योग को राहत दी जाए। कोर्ट ने सरकार और उत्पादकों के सुझाव पर फैसला लिया।





ORDER ALL TYPES OF :



- POOJA SAMAGRI,
- AYURVEDIC MEDICINE
- AND PRATIMA.



NOW GET AT YOUR HOME ON  
**MNDIVINE.COM**



ORDER NOW



<https://mndivine.com/>

HELPLINE : 9667793986  
( 10AM TO 6PM, MON-SAT )







# महाभारत के कर्ण का निधन

## कैंसर से जूझते हुए 68 वर्ष की आयु में अलविदा ली

@ रिकू विश्वकर्मा

**हिं**ंदी टेलीविजन और सिनेमा जगत के दिग्गज अभिनेता पंकज धीर का 15 अक्टूबर 2025 को 68 वर्ष की आयु में निधन हो गया। वे लंबे समय से कैंसर जैसी गंभीर बीमारी से जूझ रहे थे, और हाल ही में उनकी तबीयत में गिरावट आई थी। उनका निधन मुंबई के विले पार्ले स्थित पवन हंस श्मशान घाट में हुआ, जहां उनका अंतिम संस्कार शाम 4:30 बजे किया गया।

### महाभारत में कर्ण का किरदार

पंकज धीर को सर्वाधिक पहचान बी. आर. चोपड़ा की महाकाव्यात्मक टेलीविजन सीरीज 'महाभारत' में कर्ण के किरदार से मिली। इस भूमिका ने उन्हें घर-घर में पहचान दिलाई और वे भारतीय टेलीविजन के एक महत्वपूर्ण चेहरा बन गए। उनकी अभिनय क्षमता और कर्ण के किरदार में गहराई ने दर्शकों पर अमिट छाप छोड़ी।

### करियर की शुरुआत और संघर्ष

पंकज धीर ने अपने करियर की शुरुआत 1970 में फिल्म 'परवाना' से बतौर सहायक निर्देशक की थी। इसके बाद उन्होंने फिल्मों में छोटे-मोटे रोल किए, लेकिन उन्हें असली पहचान 1988 में आई 'महाभारत' से मिली। इस शो में कर्ण का किरदार निभाने से पहले उन्हें अर्जुन का रोल ऑफर हुआ था, लेकिन मूछें न मुंडवाने की जिद के कारण उन्होंने वह भूमिका ठुकरा दी। इसके बाद उन्हें कर्ण का रोल मिला, जिसे उन्होंने बखूबी निभाया।

### पंकज धीर का व्यक्तिगत जीवन

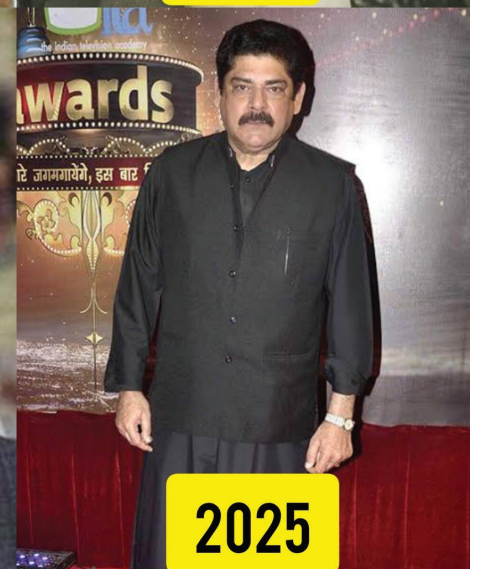
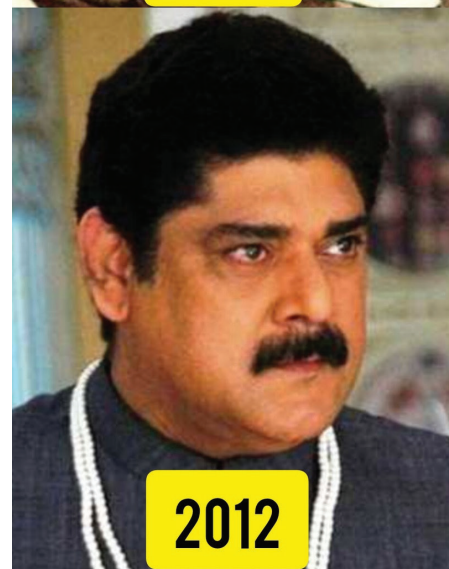
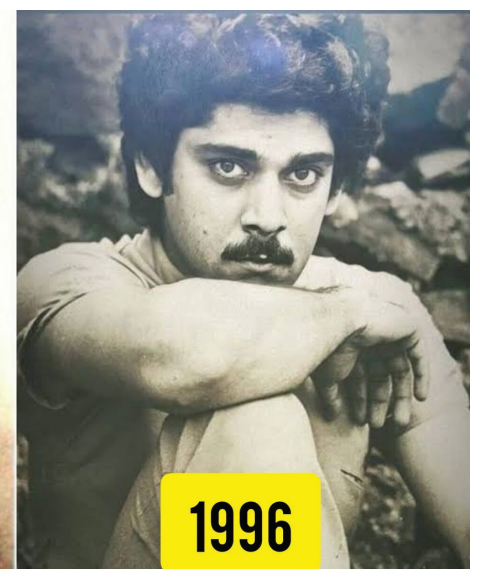
पंकज धीर के पिता सी. एल. धीर एक प्रसिद्ध निर्देशक



और निर्माता थे, जिन्होंने 60 और 70 के दशक में कई फिल्मों में काम किया। उनकी पत्नी अनीता धीर एक कॉस्ट्यूम डिजाइनर थीं। उनके बेटे निकितिन धीर भी एक अभिनेता हैं, जो फिल्म 'चेन्नई एक्सप्रेस' में अपने किरदार 'थंगाबली' के लिए प्रसिद्ध हैं। निकितिन की शादी टीवी अभिनेत्री कृतिका सेंगर से हुई है।

बता दें कि कृतिका सेंगर 'झांसी की रानी' और 'कसौटी जिंदगी की' जैसे कई धारावाहिकों में लीड रोल में नजर आ चुकी हैं। वहीं निकितिन 'रक्तांचल', 'नागार्जुन: एक योद्धा', 'इश्कबाज' और 'नागिन 3' जैसे कई शोज में नजर आए हैं। साल 2022 में निकितिन और कृतिका एक बेटी के पैरेंट बने जिसका नाम उन्होंने देविका रखा है।

पंकज ने अपनी बहू को खुद अपने बेटे से मिलवाया था। चंद्रकांता के विष पुरुष 'शिवदत्त' की भूमिका निभा चुके पंकज के बेटे निकितिन धीर पापा की तरह ही फिल्म और टीवी शोज में खूब नाम कमा रहे हैं। अपनी डील डौल की वजह से उन्हें नेगेटिव रोल में लोगों ने काफी पसंद किया। 'थंगाबली' के रोल में दर्शकों ने उन्हें खूब पसंद किया। निकितिन शाहरुख खान और दीपिका पादुकोण की 'चेन्नई एक्सप्रेस' में विलन के किरदार में दिखे थे। बेटे



को कृतिका से पंकज धीर ने ही मिलवाया था।

### पंकज धीर की अंतिम यात्रा

पंकज धीर के निधन से कुछ घंटे पहले उनके बेटे निकितिन ने इंस्टाग्राम पर एक भावुक पोस्ट शेयर की थी, जिसमें उन्होंने जीवन के उतार-चढ़ाव को स्वीकारते हुए

भगवान शिव से शरण की बात कही थी। उनकी यह पोस्ट अब सोशल मीडिया पर वायरल हो गई है। पंकज धीर का निधन भारतीय टेलीविजन और सिनेमा जगत के लिए एक अपूरणीय क्षति है। उनकी अभिनय क्षमता और कर्ण के किरदार में गहराई ने उन्हें अमर बना दिया है। उनके योगदान को हमेशा याद किया जाएगा।



# लालू परिवार के गढ़ में जंग का नया मोड़

## तेजस्वी की विरासत पर पीके की चुनौती

@ आनंद मीणा

**रा**घोपुर एक नाम, एक पहचान, एक गढ़। ये वह विधानसभा क्षेत्र है जहां आज भी राजनीति का रंग गहरा है, भावनाएँ तीखी हैं और जीत-हार की गूंज कई पीढ़ियों से सुनाई देती है। इस बार जब प्रशांत किशोर की जुबान से निकली एक चुनौती ने माहौल बदल दिया, तो हर ओर सवाल उठने लगे कि क्या राघोपुर में सत्ता की सितारियाँ फिर पलट जाएँगी?

### चुनावी बाजार में अचानक खींचतान

11 अक्टूबर, 2025 की सुबह में प्रशांत किशोर ने राघोपुर में कुछ ऐसा कह दिया, जिसने राजनीतिक गलियारों में हलचल मचा दी, “मेरे लड़ने की बात सुनकर तेजस्वी यादव दूसरी सीट ढूंढने लगे हैं। उनकी हालत भी राहुल गांधी की तरह होगी। यह राघोपुर उनका गढ़ है। उनके मां-बाप की सीट है। अगर उन्होंने राघोपुर छोड़कर कहीं और से लड़ा, तो इसका मतलब है कि उन्होंने हार स्वीकार कर ली।” ये सिर्फ बयान नहीं, चैलेंज था। उसने तेजस्वी को चुनौती दी कि असली हिम्मत दिखाओ यहीं से चुनाव लड़कर दिखाओ। राजनीतिक पंडितों ने इसे गहरी रणनीति की शुरुआत माना।

पहले यह चर्चा थी कि प्रशांत किशोर खुद राघोपुर से मैदान में उतर सकते हैं और तेजस्वी को आमने-सामने टक्कर दे सकते हैं। लेकिन 15 अक्टूबर को उन्होंने एक अचानक मोड़ लिया उन्होंने कहा, “सभी पार्टी सदस्यों ने मिलकर तय किया है कि मुझे चुनाव नहीं लड़ना है। मेरा काम है कि सभी उम्मीदवारों की जीत सुनिश्चित करूं।” यह मोड़ राजनीतिक नाटकीयता से कम नहीं था। उम्मीदवार घोषित हो चुके थे, प्रचार हो रहा था और अचानक मैं चुनाव नहीं लड़ूंगा की घोषणा ने सबको चौंका दिया।

### लूट के लिए लड़ाई का आरोप और राजनीति की गरमाहट

प्रशांत किशोर ने एनडीए और महागठबंधन पर तीखा हमला बोला। उनके शब्द थे कि बिहार की जनता पहले से जानती है कि ये लोग लूट के लिए लड़ रहे हैं। जब आप यह सोचेंगे कि आप बिहार को कितना लूट सकते हैं, तो ऐसा होना तय है। उन्होंने कई सीटों पर अपने दावेदारों की संभावित जीत पर भरोसा जताया और NDA की रणनीति पर कटाक्ष किया। उनका कहना था कि बदलाव की लड़ाई अब सत्ता के गहों में भी लड़ी जाएगी। राघोपुर इस लड़ाई की शुरुआत बनने वाला है।

### लालू परिवार का वोट बैंक

राघोपुर का परिसर लालू परिवार की राजनीतिक विरासत और पहचान से बंधा है। इस क्षेत्र से लालू प्रसाद यादव, राबड़ी देवी, और अब तेजस्वी यादव—तीनों ने चुनाव लड़ा और जीत दर्ज की है। अब तेय है कि इस गढ़ को कौन संभालेगा। वही जो इस परिवार की राजनीति को चुनौती देगा या उसी सूते हाल को आगे ले जाएगा। यह सीट सिर्फ एक विधानसभा क्षेत्र नहीं; यह



भावनाओं, जातीय समीकरणों, और राजनीतिक पहचान की लड़ाई है। यादव वोटर, भूमिहार वोटर और पासवान वोटर ये तीनों समूह यहां राजनीतिक समीकरण तय करते हैं। करीब 30 प्रतिशत यादव वोटर यहाँ हैं। भूमिहार भी बड़ी संख्या में हैं। पासवान वोटर्स की भूमिका उस मतदाता को कहते हैं जिसे निर्णायक माना जाता है। 2020 के विधानसभा चुनाव में तेजस्वी यादव ने राघोपुर से 48,000 से अधिक वोटों के अंतर से जीत की थी। पिछले आठ चुनावों में से सात बार यह सीट राजद ने जीती है। इस समय तक कुल 19 चुनाव हो चुके हैं, इनमें से राजद सात बार, कांग्रेस तीन बार, जनता दल, जदयू, लोकदल आदि ने अपनी-अपनी जीत दर्ज की है।

### कौन किससे भिड़ेगा?

जब प्रशांत किशोर ने राघोपुर की चुनौती दी, तो राजनीतिक चश्मेबीनों की निगाहें वहीं टिक गईं। अगर वो खुद मैदान में उतरते, तो यह मुकाबला प्रतीकात्मक बन जाता यह केवल तेजस्वी से टकराव नहीं, लालू परिवार की विरासत से टकराव होता। लेकिन अब, जन सुराज ने राघोपुर से खुद किशोर को नहीं, बल्कि चंचल सिंह नामक व्यक्ति को उम्मीदवार बनाया है। इस कदम ने राजद को राहत दी है, क्योंकि सीधे मुकाबले का माहौल टल गया है। तेजस्वी ने 15 अक्टूबर को यहाँ नामांकन दाखिल किया और स्पष्ट किया कि वो राघोपुर से ही चुनाव लड़ेंगे।



दूर है और वैशाली जिले में आता है, राजनीतिक दृष्टि से यह रणनीतिक रूप से अहम क्षेत्र माना जाता है। इस क्षेत्र का सामाजिक समीकरण है यादव, मुस्लिम और दलित। बीजेपी, राजद और अन्य दलों के लिए अहम गणित तैयार करता है। प्रशांत किशोर ने इस सीट से चुनाव प्रचार शुरू करने का ऐलान किया था, जिससे यह माना गया कि यह उनका प्रतीकात्मक मुकाबला हो सकता है। चुनावी रणनीति की दुनिया में यह कदम इसलिए भी महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह दिखाता है कि राजनीति सिर्फ सीटों की लड़ाई नहीं, संदेश की लड़ाई भी है। कभी-कभी मैदान पर कदम न बढ़ाना भी राजनीतिक चाल हो सकती है।

### बदलाव की इस लड़ाई में कौन जीतेगा?

राघोपुर इस समय एक सांकेतिक युद्धस्थल बन चुकी है। तेजस्वी यादव इसे अपने परिवार की विरासत मानते हैं, वहीं प्रशांत किशोर ने इसे अपनी चुनौती बनाया। उनका कदम पीछे हटना, नामांकन वापस लेना सब इस राजनीतिक कहानी के मोड़ हैं। लोग कहेंगे कि यहाँ से प्रचार शुरू करना, चैलेंज देना, या खुद उतरना यह सब सिर्फ राजनीतिक थियेटर था। लेकिन जनता वही निर्णय करेगी जो भावनाओं और गणित के बीच संतुलन बना सके।

अभी भी विरोधी दल और विश्लेषक इस बदलाव को रणनीति पलटना कह रहे हैं। बीच में यह सवाल लटकता है क्या किशोर ने पीछे हटकर अपने हथियार छिपा लिए या यह उनकी राजनीति की अगली चाल है?

राघोपुर का महत्व सिर्फ एक सीट तक सीमित नहीं है। यह बिहार की सत्ता और बदलाव की लड़ाई का प्रतीक बन चुका है। चूंकि यह पटना से लगभग 50 किलोमीटर



# दीवाली-छठ की यात्रा: ट्रेनों की नई उम्मीद

**भा**रत में दीवाली और छठ पूजा के समय घर लौटने की चाहत हर किसी के दिल में बस जाती है। परिवार से मिलने का मौका, मिठाइयों की खुशबू, और शाम की पूजा-अर्चना—ये सब कुछ त्योहारों की रौनक बढ़ाते हैं। लेकिन हर साल लाखों लोग ट्रेनों की भिड़भिड़ाहट से जूझते हैं। इस बार कुछ अलग है। मोदी सरकार ने कैबिनेट बैठक में फैसला लिया है कि दीवाली और छठ के लिए बारह हजार स्पेशल ट्रेनें चलाई जाएंगी। ये ट्रेनें एक अक्टूबर से पंद्रह नवंबर तक चलेंगी, ताकि करोड़ों यात्री बिना ज्यादा परेशानी के घर पहुंच सकें। रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव ने कहा है कि ये संख्या पिछले साल से कहीं ज्यादा है। आखिर ये कदम क्यों जरूरी है? क्या ये सिर्फ यात्रा आसान करेगा या त्योहारों की अर्थव्यवस्था को भी नई गति देगा? आइए, इसकी गहराई में उतरें। ये पहल न सिर्फ यात्रियों की सुविधा का इशारा है, बल्कि महामारी के बाद की जिंदगी में सामान्यता लौटाने का भी संकेत देती है।

## बारह हजार ट्रेनें: योजना का सरल खाका

सबसे पहले समझें कि ये बारह हजार स्पेशल ट्रेनें आखिर हैं क्या। ये कोई साधारण ट्रेनें नहीं, बल्कि खास त्योहारी यात्रा के लिए तैयार की गई सेवाएं हैं। एक ट्रेन कई चक्कर लगा सकती है, इसलिए ये बारह हजार 'सेवाओं' या 'ट्रिप्स' का मतलब है। रेलवे ने अभी तक दस हजार ट्रेनें की सूचना जारी कर दी है। इनमें एक सौ पचास ट्रेनें बिना रिजर्वेशन वाली होंगी, जो आखिरी मिनट में आने वाले यात्रियों के लिए तैयार रखी गई हैं। रेल मंत्री ने प्रेस कॉन्फ्रेंस में बताया कि ये ट्रेनें एक अक्टूबर से शुरू हो चुकी हैं और नवंबर के मध्य तक चलेंगी। सबसे ज्यादा भीड़ अक्टूबर के बीच से नवंबर के दूसरे हफ्ते तक रहेगी, जब दीवाली की रोशनी और छठ की अरघ्या का समय नजदीक आएगा।

पिछले साल रेलवे ने सात हजार सात सौ चौबीस ऐसी सेवाएं चलाई थीं। इस बार संख्या दोगुनी से ज्यादा हो गई है। क्यों? क्योंकि यात्रियों की संख्या बढ़ रही है। अनुमान है कि ये ट्रेनें करोड़ों लोगों को ले जाएंगी। खास तौर पर उत्तर प्रदेश और बिहार के रूट्स पर फोकस है, जहां से मुंबई, दिल्ली जैसे शहरों में काम करने वाले लोग घर लौटते हैं। उदाहरण के लिए, गोरखपुर, वाराणसी, भागलपुर जैसे स्टेशनों से स्पेशल ट्रेनें चल रही हैं। रेलवे ने ट्रैक बढ़ाने, कोच बनाने और इंजन उत्पादन में तेजी लाई है, जिससे ये संभव हुआ। लेकिन सवाल ये भी है—क्या इतनी ट्रेनें पर्याप्त होंगी? कुछ विशेषज्ञ कहते हैं कि भीड़ अभी भी एक चुनौती रहेगी, लेकिन ये कदम कम से कम विकल्प तो दे रहा है। सरकारी स्तर पर ये फैसला मोदी कैबिनेट की बैठक में लिया गया, जो यात्रियों को एक तरह का 'त्योहारी तोहफा' है। ये न सिर्फ सुविधा देता है, बल्कि रेलवे की क्षमता पर भरोसा जगाता है। सोचिए, अगर ये ट्रेनें न चलें तो कितने परिवार अलग रह जाएं—ये योजना उसी दर्द को कम करने की कोशिश है।

अब बात करें तो इन ट्रेनों की बुकिंग की। आरक्षित ट्रेनों के लिए आईआरसीटीसी की वेबसाइट या ऐप से टिकट ले सकते हैं। बिना आरक्षित वाली ट्रेनों के लिए स्टेशन पर या यूटिएस ऐप से। रेलवे ने सलाह दी है कि जल्दी बुक करें, क्योंकि पीक टाइम में सीटें तेजी से भर जाती हैं। इसके अलावा, रेलवे ने पंचकुअलिटी पर जोर



दिया है। सत्तर डिवीजनों में से उनतीस में नब्बे प्रतिशत से ऊपर समय पर ट्रेनें पहुंच रही हैं। ये छोटी-छोटी बातें यात्रियों के लिए बड़ी राहत हैं। लेकिन क्या ये सब बिना किसी कमी के हो पा रहा है? कुछ रिपोर्टर कहती हैं कि स्टाफ की कमी या रखरखाव की समस्या अभी बाकी है। फिर भी, ये योजना एक सकारात्मक कदम है, जो दिखाती है कि सरकार त्योहारों को सिर्फ छुट्टी नहीं, बल्कि लोगों की जिंदगी का हिस्सा मानती है।

## सेंट्रल रेलवे: मुंबईवालों की लोकल मदद

मुंबई जैसे शहर में जहां रोज लाखों लोग ट्रेनों पर सफर करते हैं, वहां त्योहारी भीड़ अलग ही सिरदर्द बन जाती है। सेंट्रल रेलवे ने इस बार तीस अतिरिक्त स्पेशल ट्रेनें चलाने का ऐलान किया है। ये ट्रेनें दीवाली और छठ के लिए खासतौर पर तैयार की गई हैं, ताकि मुंबई से गोवा या कोकण क्षेत्र जाने वाले लोग आसानी से पहुंच सकें। इसमें से छह ट्रेनें आरक्षित हैं, जो लोकमान्य तिलक टर्मिनस से मडगांव तक चलेंगी। बाकी चौबीस अनारक्षित हैं, जो पनवेल से चिपळूण के बीच वीकेंड पर दौड़ेंगी।

पहले वाली ट्रेनों की बात करें—ट्रेन नंबर 01003 लोकमान्य तिलक टर्मिनस से मडगांव के लिए सोमवार को सुबह आठ बजकर बीस मिनट पर छूटेगी और शाम आठ बजकर चालीस मिनट पर पहुंचेगी। ये अक्टूबर के छह, तेरह और बीस तारीख को चलेगी। वापसी की ट्रेन 01004 मडगांव से रविवार को चार बजकर तीस मिनट पर निकलेगी और अगले दिन सुबह छह बजकर बीस मिनट पर मुंबई पहुंचेगी। ठाणे, पनवेल, पेन, रोहा जैसे स्टेशन रुकेंगी। कोच में एक एसी टू टियर, तीन एसी थ्री टियर, आठ स्लीपर और चार जनरल क्लास हैं। बुकिंग चार अक्टूबर से शुरू हो चुकी है।

दूसरी तरफ, अनारक्षित ट्रेनें 01159 पनवेल से चिपळूण के लिए शुक्रवार, शनिवार, रविवार को चार बजकर चालीस मिनट पर चलेंगी और शाम नौ बजकर

पचपन मिनट पर पहुंचेगी। ये अक्टूबर के तीन से छब्बीस तक चलेंगी। वापसी 01160 सुबह ग्यारह बजकर पांच मिनट पर चिपळूण से पनवेल पहुंचेगी। सोमाटाने, अप्टा, जिते जैसे छोटे स्टेशनों पर रुकेंगी। ये आठ एमईएमयू कोच वाली हैं। टिकट स्टेशन या ऐप से मिलेगा।

ये तीस ट्रेनें हजारों यात्रियों को फायदा पहुंचाएंगी। लेकिन पहले खबर आई थी कि बीस ट्रेनें चलेंगी, फिर साठ का ऐलान—ये बदलाव दिखाते हैं कि रेलवे यात्रियों की फीडबैक सुन रहा है। मुंबई के लोकल ट्रेन पैसेंजर्स के लिए ये राहत है, क्योंकि कोकण रूट पर हमेशा भीड़ रहती है। क्या ये पर्याप्त है? शायद नहीं, लेकिन ये शुरुआत है। सोचिए, एक फैमिली जो गोवा घूमने जाना चाहती है, अब बिना घंटों इंतजार के ट्रेन पकड़ सकती है। ये छोटी मदद बड़ी खुशी लाती है।

## यात्रियों की कहानी: घर पहुंचने का सपना

अब बात करें उन लोगों की, जो इन ट्रेनों का इंतजार कर रहे हैं। रामू नाम का एक मजदूर मुंबई में रहता है। बिहार के गांव से आया है, और हर दीवाली पर घर लौटना चाहता है। पिछले साल टिकट न मिलने पर बस से गया था, जो थकान भरा सफर था। इस बार स्पेशल ट्रेन से घर पहुंचेगा, मां के हाथ की मिठाई खाएगा। ऐसे लाखों रामू हैं, जिनके लिए ये ट्रेनें सिर्फ वाहन नहीं, बल्कि भावनाओं का पुल हैं।

लेकिन सब कुछ आसान तो नहीं। कुछ यात्री बताते हैं कि स्टेशनों पर अभी भी भीड़ है। आरक्षित टिकट मिलना मुश्किल, और अनारक्षित में खड़े होकर सफर। रेलवे ने हेल्पलाइन नंबर दिए हैं—1398 पर कॉल करें। इसके अलावा, वेटिंग रूम, पानी की व्यवस्था पर काम चल रहा है। एक तरफ खुशी है कि ट्रेनें बढ़ीं, दूसरी तरफ सवाल कि क्या सफाई और सुरक्षा पर भी उतना ध्यान है? महामारी के बाद लोग सतर्क हैं, इसलिए मास्क और सैनिटाइजेशन जरूरी।

महिलाओं और बच्चों के लिए खास सुविधा की बात करें तो रेलवे ने लेडीज कोच बढ़ाए हैं। बुजुर्गों के लिए व्हीलचेयर मदद। ये छोटे कदम यात्रा को सहज बनाते हैं। एक सर्वे कहता है कि त्योहारी समय में सत्तर प्रतिशत यात्री परिवार के साथ जाते हैं। इसलिए ये ट्रेनें न सिर्फ ले जाती हैं, बल्कि यादें जोड़ती हैं। लेकिन विचार करने वाली बात ये है—क्या शहरों से गांवों की दूरी कम हो रही है, या बढ़ रही? ये ट्रेनें शायद उस गैप को भरने में मदद करेंगी।

## त्योहारों का बड़ा चक्र: अर्थव्यवस्था और भविष्य

दीवाली-छठ सिर्फ पूजा-पाठ नहीं, बल्कि देश की अर्थव्यवस्था का बड़ा इंजन हैं। ये ट्रेनें चलने से घरेलू पर्यटन बढ़ेगा। लोग गांव लौटेंगे, तो बाजारों में खरीदारी होगी—साड़ियां, मिठाई, पटाखे। अनुमान है कि त्योहारों से अरबों का कारोबार होगा। छोटे व्यापारी, होटल, ट्रांसपोर्ट सबको फायदा। महामारी के बाद ये रिकवरी का समय है, जहां लोग फिर से घूमना-फिरना चाहते हैं। लेकिन संतुलन देखें। पर्यावरण की बात करें तो इतनी ट्रेनें ईंधन खपत बढ़ाएंगी। रेलवे इलेक्ट्रिक ट्रेनों पर शिफ्ट हो रहा है, जो अच्छा है। दूसरी तरफ, ग्रामीण अर्थव्यवस्था मजबूत होगी। बिहार-यूपी में छठ के मेले लाखों को रोजगार देंगे। ये ट्रेनें न सिर्फ ले जाती हैं, बल्कि सामाजिक बंधन मजबूत करती हैं। परिवार मिलेंगे, तो तनाव कम होगा, खुशियां बांटेंगे।

भविष्य में क्या? रेलवे कहता है कि हर साल ट्रैक बढ़ा रहा है—चार हजार किलोमीटर सालाना। अगर ये रफ्तार बनी रही, तो अगले साल और बेहतर होगा। लेकिन हमें सोचना होगा—क्या सरकार सिर्फ ट्रेनें बढ़ाए या सड़क, हवाई यात्रा पर भी ध्यान दे? ये पहल एक संकेत है कि छोटे कदम बड़े बदलाव ला सकते हैं। दीवाली की रोशनी की तरह, ये ट्रेनें उम्मीद की किरण हैं। आखिरकार, त्योहार तो आते-जाते रहेंगे, लेकिन घर पहुंचना हमेशा खास रहेगा।



## हरियाणा के दो आत्महत्या कांडों के पीछे की सच्चाई

**मैं**ने पहले भी नपेतुले शब्दों में लिखा था की हरियाणा में आईपीएस पूरण कुमार की आत्महत्या का संबंध कहीं ना कहीं भ्रष्टाचार से जुड़ा हो सकता है। आईपीएस पूरण कुमार की पत्नी हरियाणा में ही वरिष्ठ आईएस है उनके साले हरियाणा में विधायक हैं अन्य कई रिश्तेदार भी उच्च पदों पर हैं। यही कारण था कि पूरण कुमार मनमानी करते थे। आज जिस तरह संदीप कुमार एसआई ने आत्महत्या की है और जिस प्रकार के आरोप लगाए हैं वे आरोप तो अत्यंत ही सनसनीखेज हैं। इन आरोपों के माध्यम से तो उनकी पत्नी भी संकट में आ सकती है। आईपीएस आत्महत्या बनाम एसआई आत्महत्या अब नए राज खोलेगी। मैं लंबे समय से महसूस करता हूं की दलित होने के नाम पर पूरे देश में कुछ मुझी भर दलित पूरे समाज को ब्लैकमेल कर रहे हैं। अभी-अभी आपने देखा होगा की चिराग पासवान सिर्फ एक दलित होने के कारण ही इतना ब्लैकमेल कर पा रहे हैं अन्यथा चिराग पासवान के पास कोई योग्यता नहीं है लेकिन सारा हिंदुस्तान ले लेना चाहते हैं। अभी पता चला कि हरियाणा में दलितों की एक वहां पंचायत हुई इस तरह दलितों के नाम पर यदि ब्लैकमेल किया जा रहा है तो अब पूरा राज खोलने चाहिए। आईपीएस बनाम एसआई की आत्महत्या अवश्य ही कोई नया संदेश देगी।

बजरंग मुनि

## सोना नहीं, अब चांदी है नई चमक

@ अनुराग पाठक

**सो**ने की परंपरागत चमक के बीच इस साल एक और धातु सबको चौंका दिया है वो है चांदी। कुछ ही महीनों में चांदी के दाम दोगुने से ज्यादा बढ़कर 1.75 लाख रुपये प्रति किलो तक पहुंच गए हैं। यह सिर्फ एक कमोडिटी का उछाल नहीं, बल्कि एक आर्थिक और औद्योगिक कहानी है जो बदलते समय का संकेत देती है। इतिहास में चांदी ने कभी इतनी तेजी नहीं दिखाई थी। इस बार उसने सोने को भी पछाड़ दिया है, 37% ज्यादा रिटर्न देकर। निवेश बाजार से लेकर आम लोगों तक, हर कोई यही पूछ रहा है कि आखिर चांदी में ऐसा क्या हो गया कि उसने कुछ ही महीनों में सोने को पीछे छोड़ दिया।

धनतेरस और दिवाली जैसे त्योहारी मौसम में भारत में चांदी खरीदने की परंपरा पुरानी है। लोग गहने, सिक्के, बर्तन या अन्य शुभ प्रतीक के रूप में चांदी खरीदना पसंद करते हैं। लेकिन इस बार तस्वीर कुछ अलग है। त्योहार से पहले ही ज्वेलरी बाजारों और बुलियन ट्रेडिंग में ऐसी हलचल देखने को मिली जो पहले कभी नहीं देखी गई थी। कई जगह तो चांदी ब्लैक में बिकने लगी। डिमांड इतनी तेजी से बढ़ी कि सप्लाई पीछे रह गई, और परिणामस्वरूप दामों में ऐतिहासिक उछाल देखने को मिला। यह सिर्फ भावनात्मक खरीदारी का मामला नहीं रहा, बल्कि एक आर्थिक संकेत है कि भारत और दुनिया दोनों में चांदी की उपयोगिता अब नई दिशा में बढ़ रही है।

चांदी की बढ़ती मांग की कई वजहें हैं। पहले यह धातु मुख्यतः आभूषणों और धार्मिक वस्तुओं में उपयोग होती थी, लेकिन अब इसका रोल पूरी तरह बदल गया है। 21वीं सदी में चांदी एक औद्योगिक मेटल के रूप में उभरी है। सोलर पैनलों में इसका इस्तेमाल लगातार बढ़ रहा है क्योंकि यह बिजली का उत्कृष्ट संवाहक (conductor) है। आज हर आधुनिक सोलर सेल में चांदी का प्रयोग होता है। वैश्विक स्तर पर ग्रीन एनर्जी की दिशा में बढ़ती हुई रफ्तार ने इस धातु की डिमांड को अभूतपूर्व बना दिया है। इलेक्ट्रिक व्हीकल्स में भी चांदी का प्रयोग बढ़ रहा है, क्योंकि यह वाहनों के इलेक्ट्रॉनिक सर्किट और बैटरी कनेक्शन में अहम भूमिका निभाती है। इतना ही नहीं, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और हाई-टेक चिप निर्माण में भी चांदी एक जरूरी धातु बनती जा रही है।

अमेरिका ने तो इसे अब 'क्रिटिकल मिनेरल्स' की सूची में डालने की योजना बना ली है। इसका मतलब यह है कि आने वाले वर्षों में चांदी को रणनीतिक दृष्टि से भी महत्वपूर्ण माना जाएगा, ठीक वैसे ही जैसे तेल या लिथियम को। अमेरिकी ड्राफ्ट रिपोर्ट में यह साफ लिखा गया है कि आने वाले दशक में चांदी ऊर्जा, रक्षा और तकनीक तीनों सेक्टर के लिए जरूरी धातु बन जाएगी। जब

किसी धातु को एक वैश्विक महाशक्ति क्रिटिकल घोषित करने की सोचती है, तो यह केवल कीमत बढ़ने का संकेत नहीं होता, बल्कि उसके रणनीतिक मूल्य का भी इशारा होता है।

दूसरी ओर, दुनिया में चांदी की सप्लाई सीमित होती जा रही है। कई देशों में खदानों पर पर्यावरणीय प्रतिबंध बढ़ गए हैं। दक्षिण अमेरिका, मैक्सिको और चीन जैसे देशों में उत्पादन घटा है। भारत में तो वैसे भी चांदी की खुदाई बहुत सीमित है और हम इसका अधिकांश हिस्सा आयात करते हैं। दिलचस्प तथ्य यह है कि दुनिया की लगभग 70% चांदी कॉपर और जिंक जैसी अन्य धातुओं की खुदाई के दौरान बायप्रोडक्ट के रूप में निकलती है। यानी जब तक तांबा और जिंक की माइनिंग नहीं बढ़ेगी, चांदी की सप्लाई अपने आप नहीं बढ़ सकती। इस तरह मांग और आपूर्ति के बीच जो भारी अंतर बना हुआ है, वही कीमतों को ऊपर खींच रहा है। यह आर्थिक सिद्धांत का सबसे सीधा उदाहरण है scarcity leads to value, यानी कमी बढ़ेगी तो कीमत भी बढ़ेगी।

निवेश के नजरिए से भी चांदी इस समय चर्चा में है। बीते साल से लेकर अब तक इसमें लगभग 100% रिटर्न मिला है। बाजार के विशेषज्ञों का कहना है कि यह केवल एक अस्थायी उछाल नहीं, बल्कि एक दीर्घकालिक ट्रेड की शुरुआत है। ऑगमेंट कंपनी की रिसर्च हेड रेनिशा चेनानी का कहना है कि अमेरिका में ब्याज दरों में कटौती, संभावित शटडाउन और बढ़ते टैरिफ से निवेशकों का रुझान चांदी की ओर बढ़ा है। उनके अनुसार, लंबी अवधि में चांदी में तेजी बनी रह सकती है, लेकिन फिलहाल रिकॉर्ड हाई स्तर पर नई खरीदारी से बचना चाहिए। वहीं केडिया कमोडिटी के डायरेक्टर अजय केडिया का मानना है कि चांदी ने भले ही 100% का गेन दिखाया हो, पर लॉन्ग टर्म में यह सोने की तुलना में ज्यादा तेजी दिखा सकती है। HDFC सिक्योरिटीज के हेड अनुज गुप्ता के मुताबिक चांदी अभी भी सोने के मुकाबले अंडरवैल्यूड है। इंडस्ट्रियल डिमांड इसके दामों को सपोर्ट कर रही है, और गिरावट के दौर में इसमें निवेश बेहतर रहेगा।

यानी स्थिति साफ है कि शॉर्ट टर्म में सावधानी, लॉन्ग टर्म में संभावना। अगर किसी निवेशक के पास पर्याप्त पूंजी है और वह इसे कुछ सालों के लिए पार्क कर सकता है, तो चांदी एक मजबूत विकल्प बन सकती है। लेकिन यह भी समझना जरूरी है कि चांदी की कीमतें सोने की तुलना में ज्यादा अस्थिर रहती हैं। इसमें गिरावट भी तेज होती है और उछाल भी अचानक आता है। इसलिए निवेश सोच-समझकर और चरणबद्ध तरीके से करना बेहतर रहेगा। भारत में निवेश के तीन प्रमुख रास्ते हैं। फिजिकल सिल्वर, सिल्वर ETF और सिल्वर फ्यूचर्स। फिजिकल सिल्वर सबसे पारंपरिक तरीका है, लेकिन इसमें चोरी या शुद्धता का रिस्क रहता है।

## जुबानी तीर

“

यह सिर्फ एक परिवार का मामला नहीं है, यह पूरे दलित समुदाय का सवाल है। यह मामला जाति-आधारित प्रताड़ना से जोड़कर देखा जाना चाहिए। ये घटना दिखाती है कि सरकार की न्याय दिलाने की क्षमता कितनी कमजोर है।

राहुल गांधी (कांग्रेस नेता)



“

जांच निष्पक्ष होनी चाहिए, लीपापोती नहीं होनी चाहिए, अगर लीपापोती हुई तो बदरिश्त नहीं की जाएगी।

अभय सिंह चौटाला (इनेलो)



“

दोषी चाहे कितना ही प्रभावशाली क्यों न हो, उसे बख्शा नहीं जाएगा। सरकार यह सुनिश्चित करेगी कि जांच निष्पक्ष और पारदर्शी हो। सरकार हर पहलू को गंभीरता से देख रही है और कार्रवाई समय से की जाएगी।



जाएगी।

नयब सिंह सैनी (मुख्यमंत्री, भाजपा)





# गठियाबंध: जोड़ों के दर्द से मुक्ति की राह आयुर्वेद के साथ

**क**भी किसी बुजुर्ग को चलते हुए घुटनों को सहलाते देखा होगा, या किसी कामकाजी महिला को हाथों की उंगलियां मरोड़ते हुए। अक्सर वे कहते हैं “घुटने में जकड़न है”, “उठने-बैठने में दर्द होता है”, हाथ अकड़ जाते हैं।

यही दर्द धीरे-धीरे गठियाबंध यानी आर्थराइटिस (Arthritis) का रूप ले लेता है। भारत में हर तीसरे बुजुर्ग को जोड़ों का दर्द किसी न किसी रूप में सताता है। पर सच यह है कि गठिया सिर्फ उम्र की बीमारी नहीं, बल्कि आज के तनाव, खानपान और जीवनशैली से जुड़ी समस्या भी बन चुकी है।

आयुर्वेद कहता है जहाँ वात का असंतुलन होगा, वहाँ दर्द होगा। और गठिया उसी वात असंतुलन का परिणाम है।

## क्या है गठियाबंध (Arthritis)?

आम भाषा में कहें तो यह जोड़ों की बीमारी है। शरीर के जो हिस्से एक-दूसरे से जुड़कर चलने की ताकत देते हैं — जैसे घुटने, कोहनी, उंगलियां, कंधे — वहीं सूज जाते हैं, दर्द करते हैं या अकड़ जाते हैं। आधुनिक चिकित्सा विज्ञान इसे Arthritis कहता है, और इसके दो प्रमुख रूप हैं:

1. ऑस्टियोआर्थराइटिस (Osteoarthritis) — इसमें जोड़ों की हड्डियों के बीच की परत घिस जाती है, जिससे हड्डियाँ एक-दूसरे से रगड़ खाने लगती हैं।
2. रूमेटॉइड आर्थराइटिस (Rheumatoid Arthritis) — यह एक Autoimmune Disease है, जिसमें शरीर की इम्यून सिस्टम खुद अपने जोड़ों पर हमला करने लगती है।

दोनों ही स्थितियाँ बेहद दर्दनाक होती हैं। सुबह उठते ही उंगलियाँ सूज जाना, घुटनों में चटक आवाज आना, या अचानक जोड़ों में जकड़न महसूस होना, ये इसके शुरुआती लक्षण हैं।

## आयुर्वेदिक दृष्टिकोण से गठिया

आयुर्वेद में इस रोग को आमवात कहा गया है। आम यानी शरीर में अपच से बनी विषैली चीज़ें, और “वात” यानी हवा तत्व का दोष। जब शरीर में जठराग्नि (पाचन शक्ति) कमजोर पड़ जाती है, तो अधपचा भोजन आम बनकर रक्त और जोड़ों में जमा हो जाता है। यही “आम” वात दोष को बढ़ाता है और जोड़ों में सूजन, दर्द और कठोरता लाता है।

आयुर्वेद का सिद्धांत साफ है कि आम का नाश करो, वात को शांत करो, और शरीर की अग्नि को प्रज्वलित रखो।

## गठियाबंध के मुख्य कारण

तैलीय, भारी और ठंडी चीज़ों का अत्यधिक सेवन लंबे समय तक बैठे रहना, शारीरिक श्रम की कमी मानसिक तनाव और नींद की कमी अपच और कब्ज सर्द मौसम में पर्याप्त गरमी का अभाव



अत्यधिक दूध या दही का सेवन बिना पाचन के अनुसार

गठिया के आयुर्वेदिक इलाज की तीन मुख्य दिशाएं

## 1. शुद्धीकरण (Detoxification) — शरीर से आम और विष बाहर निकालना

आयुर्वेद में इसे पंचकर्म कहा गया है।

इसमें पाँच प्रमुख विधियाँ होती हैं — वमन, विरेचन, बस्ती, नस्य और रक्तमोक्षण। गठिया में सबसे उपयोगी मानी जाती है बस्ती चिकित्सा — यानी औषधीय तेल या काढ़े की एनिमा थेरेपी, जो वात दोष को शांत करती है और जोड़ों की सूजन घटाती है।

इसके अलावा अभ्यंग (तेल मालिश) और स्वेदन (भाप स्नान) से शरीर के विष बाहर निकलते हैं और दर्द में आराम मिलता है।

## 2. औषधीय उपचार (Herbal Treatment)

आयुर्वेदिक ग्रंथों में कई ऐसी जड़ी-बूटियों का उल्लेख है जो गठिया में रामबाण असर करती हैं:

गुग्गुलु (Commiphora mukul): यह सूजन कम करती है और जोड़ों को मजबूत बनाती है।

अश्वगंधा: शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाती है

और दर्द से राहत देती है।

रास्ना: वात को शांत करती है और जोड़ों की गतिशीलता बढ़ाती है।

शल्लकी (Boswellia serrata): आधुनिक शोध में भी यह सूजन कम करने में प्रभावी पाई गई है।

दशमूल: दस जड़ों का यह संयोजन शरीर में वात-संतुलन बनाकर दर्द कम करता है।

इनके अलावा गुग्गुलु टैबलेट, योगराज गुग्गुलु, सिंधुवासव, महायोगराज गुग्गुलु जैसी दवाइयाँ आयुर्वेदिक चिकित्सक सलाह से ली जा सकती हैं।

## 3. आहार और दिनचर्या

गठिया के रोगी के लिए “खानपान ही दवा” है।

आयुर्वेदिक उपचार तभी प्रभावी होता है जब रोगी अपना आहार-संयम रखे।

सुबह खाली पेट गुनगुना पानी पीना।

आहार में हल्दी, अदरक, मेथी, लहसुन और अजवाइन शामिल करें।

ठंडी, तली-भुनी और भारी चीज़ें न खाएं।

दही, ठंडा दूध और जंक फूड से परहेज करें।

मूंग की दाल, हरी सब्जियाँ और सूप का सेवन बढ़ाएं।

कब्ज न हो इसके लिए रात में त्रिफला चूर्ण ले

सकते हैं।

रोज़ाना हल्की सैर या योगासन जैसे ताड़ासन, त्रिकोणासन, पवनमुक्तासन करें।

## घरेलू नुस्खे

1. मेथी दाना और हल्दी:

एक चम्मच मेथी दाना रात में भिगोकर सुबह चबाएँ। हल्दी वाला दूध पीना सूजन और दर्द दोनों में फायदेमंद है।

2. अजवाइन का पानी:

अजवाइन को पानी में उबालकर दिन में दो बार पीने से वात कम होता है।

3. सरसों तेल से मालिश:

हल्का गुनगुना सरसों या तिल का तेल जोड़ों पर लगाने से रक्त संचार बढ़ता है और जकड़न कम होती है।

4. गिलोय का रस:

यह प्राकृतिक इम्यून बूस्टर है, जो गठिया में राहत देता है।

## आधुनिक और आयुर्वेद का मेल

आज कई बड़े आयुर्वेदिक संस्थान जैसे केरल पंचकर्म केंद्र, आचार्य बालकृष्ण की पतंजलि रिसर्च, और कैराली आयुर्वेद ग्राम में आधुनिक तकनीक के साथ पारंपरिक इलाज को जोड़ा जा रहा है।

MRI और ब्लड रिपोर्ट से रोग का स्तर जानकर, उसी के अनुसार पंचकर्म और औषधीय चिकित्सा दी जाती है। इससे न केवल दर्द कम होता है, बल्कि रोग की जड़ पर असर होता है। यानी जोड़ों का क्षय रुकता है और शरीर फिर से सक्रिय बनता है।

## गठिया से बचाव ही सबसे बड़ा इलाज

आयुर्वेद कहता है कि सम्यक आहार, सम्यक विहार, और सम्यक विचार यही आरोग्य के तीन स्तंभ हैं।

अगर हम संतुलित जीवन जीना सीख लें

सुबह सूरज की रोशनी में चलें,

खानपान में सादगी रखें,

तनाव कम करें

तो गठिया जैसी बीमारियाँ हमारे शरीर से दूर रह सकती हैं।

## आयुर्वेद शरीर को भीतर से ठीक करता है

गठियाबंध कोई साधारण रोग नहीं है — यह शरीर के संतुलन और जीवनशैली दोनों का आईना है। जहाँ दवाओं से कुछ समय की राहत मिलती है, वहीं आयुर्वेद शरीर को भीतर से ठीक करता है। यह केवल दर्द मिटाने की चिकित्सा नहीं, बल्कि जीवन को फिर से गति देने का विज्ञान है।

आयुर्वेद हमें सिखाता है कि रोग से लड़ो नहीं, उसे समझो और संतुलन बनाओ। गठिया का दर्द चाहे जितना पुराना क्यों न हो, अगर सही जड़ी-बूटी, पंचकर्म, और आहार का पालन किया जाए, तो राहत मिलना संभव है।



# बाबा कीनाराम जी: अवधूत संत की अमर लीला

## अवधूत संत का दिव्य स्वरूप

**ज**ब हम सच्चे संतों की बात करते हैं, तो मन में एक ऐसी छवि उभरती है जहाँ सत् और असत् के भेद से परे, परम आनंद में लीन होकर आत्मा का चिंतन होता है। चित्त की वृत्तियों को रोककर, उस अपार सागर में रम जाना ही अवधूत का सच्चा रूप है। ऐसे संत के लिए जगत के गुण-अवगुण सब आत्मा के ही रूप हो जाते हैं। वे प्रिय-अप्रिय के बंधनों से मुक्त होकर आत्मज्ञान में स्थिर रहते हैं। ठीक ऐसे ही थे हमारे पूज्य बाबा कीनाराम जी, जो सिद्ध अघोर संत थे। वे आत्मविज्ञान में रमने वाले परम विरक्त महात्मा थे। उनकी एक जगह कही बात सुनकर दिल भर आता है कि मैं ही देवालय हूँ, देवता हूँ, पूजा हूँ और पूजारी हूँ। मैंने ही वृंदावन में कृष्ण रूप में गोपी और ग्वाल्लों के साथ नृत्य किया। मैंने ही हनुमान बनकर राम जी का हित साधा। ये शब्द उनकी एकरसता और एकात्मबोध की गहराई दिखाते हैं, जैसे सारा जगत एक ही परमात्मा का प्रतिबिंब हो। बाबा कीनाराम जी निर्मल, उपाधिरहित, निरंजन चिन्मय सत्य के उपासक थे। संत कबीर की वाणी और विचारों का उन पर गहरा असर पड़ा था। वे खरा सत्य बोलते थे। उन्होंने कहा कि बड़ा आश्चर्य है, सत्य तत्व खुद में परिपूर्ण है, लेकिन बताने वाले उसे अलग और अप्रकट बताते हैं। उनकी एक उक्ति है: “अहिं अथा डगर बतावत, वहिहिं वहिरा वानी। ‘रामकिना’ सतगुरु सेवा विनु, भूलि मरयो अज्ञानी।” ये शब्द सुनकर जीव की अज्ञानता पर दया आती है और गुरु भक्ति की महिमा समझ आती है। बाबा कीनाराम जी पहुंचे हुए संत थे, उनकी सिद्धि उच्च कोटि की थी। उनके जीवन की हर घटना परमात्मा की कृपा की झलक दिखाती है, जो हमें भक्ति के मार्ग पर चलने को प्रेरित करती है।

### जन्म और बाल्यकाल की दिव्यता

बाबा कीनाराम जी का जन्म काशी के निकट चंदौली मंडल में, वाणगंगा नदी के तट पर रामगढ़ गांव में हुआ था। सम्वत् 1684 के चैत मास में उन्होंने अवतार लिया। उनके पिता अकबरसिंह बड़े सुशील गृहस्थ थे। उन्होंने अपने पुत्र का पालन-पोषण बड़े प्यार से किया। शिक्षा-दीक्षा की भी पूरी व्यवस्था की। कीनाराम जी तीन भाइयों में सबसे बड़े थे। परिवार की सारी आशाएं उन पर टिकी थीं। माता-पिता सोचते थे कि बड़ा होकर कीनाराम घर संभाल लेंगे। लेकिन बाबा तो सारे जगत के माता-पिता के घर को आत्मज्ञान के प्रकाश से रोशन करने आए थे। बचपन से ही उनमें आध्यात्मिकता का सहज आकर्षण था। वे जन्मजात संत थे। अल्पावस्था में भी वे अपने साथियों से राम नाम का उच्चारण करवाते थे। राम नामामृत कान में पड़ते ही प्रसन्नता से नाच उठते थे। ये बाल लीला देखकर लगता है कि परमात्मा खुद उनके रूप में खेल रहे थे। जब वे छोटे थे, तभी उनका विवाह कर दिया गया। लगभग तेरह साल की उम्र में गौने की तिथि तय हुई। नाच-गाने की तैयारी होने लगी। घर में आनंद मनाया जाने लगा। निकट के सगे-संबंधियों को निमंत्रित किया गया। लेकिन एक दिन पहले बारात की तैयारी देखकर मां से कीनाराम जी ने कहा कि मैं दूध-भात खाना चाहता हूँ। मां ने समझाया



कि शुभ अवसर पर दूध-भात खाना निषेध है, गौने के समय ऐसा अमंगल भोजन मांगना अनुचित है। लेकिन कीनाराम जी ने हठ किया और दूध-भात खाकर ही सांस ली। अगले दिन बारात जाने की वाली थी कि ससुराल से खबर आई कि वधू का देहांत हो गया। शव को अंत्येष्टि के लिए सैदपुर घाट पर लाया गया। तब लोगों को दूध-भात खाने का रहस्य समझ आया। ये घटना उनके दिव्य ज्ञान की झलक थी, जैसे परमात्मा ने खुद उनके माध्यम से लीला रची हो। इस घटना के बाद वे ज्यादा दिनों तक घर नहीं ठहर सके। उनका मन वैराग्य की ओर मुड़ गया, जो हमें सिखाता है कि सांसारिक बंधन कितने क्षणिक हैं।

### वैराग्य का उदय और गुरु की खोज

उन दिनों कारो नामक जगह में रामानुजी संप्रदाय के प्रसिद्ध महात्मा बाबा शिवराम जी रहते थे। कीनाराम जी के मन में उनके प्रति बड़ी श्रद्धा थी। वे उनके दरबार में पहुंचे और सेवा में लग गए। उन्होंने निवेदन किया कि मुझे शिष्य रूप में स्वीकार कर मेरा भवबंधन काट दीजिए। लेकिन शिवराम जी ने पहले स्वीकार नहीं किया। एक दिन विचित्र घटना हुई। शिवराम जी के साथ कीनाराम जी गंगा तट पर खड़े थे। शिवराम जी ने पूजन का सामान और भगवा वस्त्र देकर जल में स्नान करने को कहा। लेकिन उन्होंने देखा कि गंगाजल बढ़कर तट पर खड़े कीनाराम जी के चरणों को स्पर्श कर रहा है। वे चकित हो गए और बड़ी प्रसन्नता से कीनाराम जी को मंत्र देकर अपनी शरण में ले लिया। कीनाराम जी ने उनके स्तवन में कहा: “कल्पन हूँ के कल्पतरु गुरु दयाल जिय जानि। शिवराम है नाम शुचि रामकिना पहिचानि।” ये शब्द गुरु की महिमा गाते हैं, जो दिल को छू जाते हैं। लेकिन वे ज्यादा दिनों तक शिवराम जी के पास नहीं रह सके। परिस्थितियों से विवश होकर बाबा कीनाराम जी ने कारो छोड़ दिया। वे भ्रमण के लिए

निकल पड़े। आसन उठा लिया और नैगड़ीह गांव पहुंचे। वहां एक बुढ़िया को रोते देखा तो रोने का कारण पूछा। बुढ़िया ने कहा, “बाबा, तुम अपनी राह जाओ।” लेकिन बाबा ठहर गए। आखिर बुढ़ी ने बताया कि जमींदार का कर बाकी है, वह मेरे लड़के को बलपूर्वक पकड़ ले गया। बाबा बुढ़िया के साथ जमींदार के घर गए। लड़का कड़ाके की धूप में खड़ा था। बाबा ने जमींदार से कहा कि इसे छोड़ दो, लेकिन वह नहीं माना। उसने कहा कि भिक्षा चाहते हो तो लेकर चले जाओ, या सारा कर खुद दे दो। महाराज को ये बात लग गई। उन्होंने लड़के को हटने को कहा और जमींदार से बोले कि इस जगह को खोदो, रुपये मिलेंगे, जितना चाहो ले लो। जमीन खोदी गई, रुपये देख जमींदार उनके चरणों में गिर पड़ा और क्षमा मांगी। बाबा ने बुढ़िया से कहा, “अपना लड़का ले जा।” लेकिन बुढ़िया बोली, “कृपानाथ, ये पुत्र आपका है।” उसने लड़के को महाराज के चरणों में समर्पित कर दिया। बाबा ने उसका नाम बीजाराम रखा। बीजाराम उनके प्रसिद्ध और मुख्य शिष्यों में गिने जाते हैं। ये लीला देखकर लगता है कि परमात्मा दीनों की रक्षा के लिए संतों को भेजते हैं।

### यात्राओं में चमत्कारों की लीला

नए शिष्य बीजाराम के साथ बाबा तीर्थ-भ्रमण करने लगे। कई सालों बाद वे गांव लौटे। गांव के दक्षिण वाणगंगा सरिता के निकट जंगल में वट वृक्ष के नीचे आसन लगाया। भजन करने लगे। धीरे-धीरे दर्शनार्थियों की भीड़ बढ़ने लगी। बाबा ने एक पक्का कुआं बनवाया। इसी तरह एक पक्का वरामदा बनवाया, लेकिन छत को उपलों से पटवाया और कहा, “तुम पक्की हो जा।” उनके कहते ही छत पक्की हो गई। कुआं रामसागर नाम से प्रसिद्ध है। इस तपोभूमि के निकट कीनेश्वर महादेव का मंदिर भी है। दर्शनार्थियों की भीड़ से उकताकर बाबा फिर तीर्थ-भ्रमण को निकले। वे जूनागढ़ पहुंचे। नगर के बाहर आसन लगा दिया। बीजाराम को केवल तीन घरों से भिक्षा मांगने का आदेश दिया। लेकिन भिक्षा मांगते ही सिपाहियों ने उन्हें जेल में डाल दिया। बहुत से साधु जेल में बंद थे, उनके पीसने के लिए 981 चक्कियां थीं। बीजाराम के देर होने पर बाबा ने ध्यान से सारी घटना समझ ली। खुद नगर में भिक्षा मांगने आए। उन्हें भी जेल में डाल दिया और आटा पीसने का आदेश मिला। बाबा ने एक चक्की पर डंडा मारा, वह चलने लगी। उसी तरह बाकी चक्कियां भी चलने लगीं। ये बात नगर में बिजली की तरह फैल गई। नवाब ने बाबा से क्षमा मांगी और हीरे-मोती से भरी थाल भेंट की। बाबा ने दो-चार हीरे-मोती मुंह में रखकर बाहर फेंक दिए और कहा कि न तो ये खट्टे हैं, न मीठे। नवाब ने भेंट स्वीकार करने की प्रार्थना की। बाबा बोले कि मेरी सबसे बड़ी भेंट ये है कि तुम्हारे नगर में जितने यति-सन्यासी आए, उतनों को ढाई-ढाई पाव आटा देने की व्यवस्था हो। नवाब ने आज्ञा सिर माथे लगाई और ऐसे सिद्ध संत के दर्शन से खुद को धन्य माना। ये चमत्कार हमें सिखाता है कि संतों के लिए सांसारिक वैभव कुछ नहीं। जूनागढ़ से बाबा गिरनार पहुंचे। वहां परम अवधूत भगवान दत्तात्रेय का दर्शन हुआ। बाबा ने उनसे मंत्र-दीक्षा ली। इस घटना पर उनकी उक्ति

है: “पुरी द्वारिका गोमती गंगा सागर-तीर। दत्तात्रेय मोहि कहें मिले हरनमहा भवपीर। मोहि प्रबोधे विविध विधि त्रिकालज्ञ भगवान। अंतरहित होते भये वानी सत्य प्रमाण।” ये वाणी सुनकर मन दत्तात्रेय की भक्ति में डूब जाता है। ये सच्ची संत वाणी है, जिसमें संदेह की गुंजाइश नहीं।

### काशी में अघोर सिद्धि की प्राप्ति

तीर्थ-भ्रमण के बाद बाबा कीनाराम जी काशी पहुंचे। केदार घाट श्मशान पर डेरा डाला। वहां प्रसिद्ध अघोरी संत कालूराम से भेंट हुई। कालूराम सिद्ध संत थे। कीनाराम जी ने देखा कि कालूराम शव की खोपड़ी को तट पर बुलाकर चना खिला रहे हैं। कीनाराम जी बोले, “ये कैसा खेल कर रहे हो, स्थान पर चलिए।” थोड़ी दूर गंगा में एक शव बहता आ रहा था। कालूराम बोले, “मूर्दा आ रहा है।” कीनाराम जी ने कहा, “ये तो जिंदा है।” कालूराम आश्चर्य में पड़ गए। देखते-देखते बाबा ने मुट्ठे से कहा, “इधर आओ।” वह खड़ा होकर घाट पर आ गया। घर जाने पर लोग उसे जीवित देख आश्चर्य में पड़ गए। मां ने जीवित पुत्र को बाबा के चरणों में सदा के लिए समर्पित कर दिया। बाबा ने उसका नाम रामजियावन रखा। कालूराम इस सिद्धि से प्रसन्न होकर बाबा को अघोर मंत्र प्रदान कर अदृश्य हो गए। इस घटना पर लिखा है: “कीना कीना सब कहै कालू कह न कोय। कालू कीना एक भये, राम करै सो होय।” ऐसी मान्यता है कि कालूराम के रूप में भगवान दत्तात्रेय ने ही दर्शन देकर धन्य किया था। कालूराम के गुप्त होने पर बाबा काशी में कृमि-कुंड पर रहने लगे। उनकी सिद्धि से आकृष्ट होकर लोग अनुयायी बनने लगे। ये लीला हमें अघोर मार्ग की गहराई दिखाती है, जहाँ जीवन-मृत्यु का भेद मिट जाता है।

### उपदेशों में परमात्मा का दर्शन

बाबा कीनाराम जी का सिद्धांत था कि अगाध निर्वाण पद की प्राप्ति गुरु कृपा से ही संभव है। उनकी दृष्टि में ॐ मंत्र की सिद्धिभूमि रामनाम में ही है। रामनाम उनका प्राणमंत्र था। उनका वचन है:

“अमर बीज विज्ञान को कयों समुझि कर लेहु।

ॐ सो मन्य विचारि कै रामनाम चित देहु।”

उनका तत्व निरूपण सीधी-सादी भाषा में है, जो हृदय पिघला देती है। उन्होंने बताया कि सत्य पुरुष सत्य नाम में स्थित है, रूप-रेख से अतीत है। उन्होंने सर्वत्र व्याप्त चिदानंद सुखधाम आत्माराम की वंदना की। अनुभव से कहा: “व्यापक व्याप्य प्रकाश मैं चिदानन्द सुखधाम। बहिरंतर जहें तहें प्रगत बन्दी आत्माराम।” बाबा ने अनुभव किया कि मैं ही योगी, युक्ति और मुक्ति हूँ। तत्त्वमूल, फल-फूल-सब में मेरा अधिवास है। अभेद-भेद सब मेरी सत्ता में है। मैं ही खोटा-खरा, खेदगत-खेदरहित हूँ। मैं परम सत्य हूँ, जगत में मुझसे परे कुछ नहीं। उनका शब्द है: “शब्द का रूप साचो जगतपुरुष है, शब्द का भेद कोई सत जानै। शब्द अज अमर अद्वितीय व्यापक पुरुष, सत गुरु शब्द सुविचार आनं। चद में जोति है जोति में चद है अरय अनुभव करै एक मानै। ‘राम किना’ राह यह अगम वाकी निपट, निकट को छाडि के प्रीति ठानै।”



**म**ध्य प्रदेश के छोटे-छोटे गाँवों में ये दिन ऐसे बीते जैसे कोई बुरा सपना। बच्चे जो बुखार या सर्दी की छोटी-मोटी बीमारी से जूझ रहे थे, उन्हें दी गई एक साधारण सी कफ सिरप ने उनकी जान ले ली। ये घटना सिर्फ एक हादसा नहीं, बल्कि हमारी स्वास्थ्य व्यवस्था की कमजोरियों की कहानी है। अक्टूबर दो हजार पच्चीस के पहले हफ्ते में, जब खबरें आई कि कम से कम बाईस बच्चे इस जहरीली दवा से मारे गए, तो पूरे देश में सवाल उठे। ये बच्चे गरीब परिवारों के थे, जो सस्ती दवाओं पर निर्भर थे। लेकिन क्या ये सिर्फ एक कंपनी की गलती थी, या बड़े सिस्टम की नाकामी? आइए, इसकी परतें खोलते हैं, धीरे-धीरे, ताकि हम सब सोचें कि आगे क्या बदलाव लाएँ।

### क्या हुआ छिंदवाड़ा के इन गाँवों में?

छिंदवाड़ा ज़िले के परासिया तहसील के आसपास के गाँवों में, अगस्त के मध्य से ही बच्चों में बुखार और सर्दी के मामले बढ़ने लगे। ये कोई नई बात नहीं थी—बारिश के मौसम में वायरल बुखार तो होता ही है। माता-पिता अपने नन्हे बच्चों को नज़दीकी डॉक्टर के पास ले गए। वहाँ से मिली दवा थी—कोल्डिफ्र नाम की कफ सिरप। ये सिरप सस्ती थी, आसानी से मिल जाती थी, और डॉक्टरों ने इसे भरोसे से लिखा। लेकिन ये सिरप जहरीली साबित हुई।

इस सिरप में डायड्रॉलोन ग्लाइकोल नाम का एक केमिकल मिला था, जो ब्रेक फ्लूइड और एंटीफ़ीज में इस्तेमाल होता है। ये केमिकल इतना ख़तरनाक है कि थोड़ी-सी मात्रा भी किडनी को ख़राब कर देती है। टेस्टिंग में पता चला कि सिरप में ये केमिकल सैतालीस प्रतिशत से ज़्यादा था—जितना मिलना चाहिए, उससे सैकड़ों गुना ज़्यादा। बच्चे पहले तो सामान्य बुखार से पीड़ित दिखे। फिर, कुछ दिनों बाद उल्टी शुरू हो गई, पेट दर्द हुआ, और सबसे डरावनी बात—पेशाब बंद हो गया। ये लक्षण किडनी फेलियर के थे।

पहली मौत तो सितंबर के दूसरे दिन हुई। उसके बाद, एक के बाद एक बच्चे अस्पताल पहुँचे। छिंदवाड़ा के सरकारी अस्पतालों में जगह कम थी, तो परिवार वाले बच्चों को नागपुर के निजी अस्पतालों में ले गए। वहाँ डायलिसिस चली, वेंटिलेटर पर रखा गया, लेकिन कई बच्चे बच न सके। कुल मिलाकर, सत्रह बच्चे छिंदवाड़ा से, दो बैतूल से, और एक पंधुरना से थे। ये मौतें सात हफ़्तों में हुईं—अगस्त से अक्टूबर तक। अभी भी पाँच बच्चे इलाज़ में हैं: दो नागपुर के मेडिकल कॉलेज में, दो एम्स में, और एक निजी अस्पताल में।

ये सब कैसे हुआ? सिरप बनाने वाली कंपनी, सेसन फ़ार्मास्यूटिकल्स, तमिलनाडु के कांचीपुरम में है। वहाँ के फ़ैक्टरी का हाल देखकर कोई भी सिहर उठे। गंदे फ़र्श, हवा में फ़िल्टर न होना, चूहों का डर—और सबसे बड़ी बात, तीन सौ चौंसठ नियमों का उल्लंघन। कच्चा माल टेस्ट ही नहीं किया गया। प्रोपाइलीन ग्लाइकोल नाम का सॉल्वेंट इस्तेमाल किया गया, जो सस्ता लेकिन जहरीला था। कंपनी ने इसे दवा के रूप में बेचा, बिना चेक किए। मध्य प्रदेश की ड्रग कंट्रोल टीम ने अक्टूबर के तीसरे को ये conrm किया। उसके बाद तमिलनाडु ने सिरप पर बैन लगा दिया। लेकिन तब तक देर हो चुकी थी।

ये घटना सिर्फ स्थानीय नहीं। गुजरात में भी दो और सिरप—रेस्पिफ़्रेस टीआर और रिलाइज़—में वही ज़हर मिला। उन्हें भी वापस बुला लिया गया। सेंट्रल ड्रग्स स्टैंडर्ड कंट्रोल ऑर्गनाइज़ेशन ने कहा कि ये सिरप एक्सपोर्ट नहीं हुए, लेकिन डब्ल्यूएचओ ने चेतावनी दी कि अवैध रास्तों से बाहर जा सकते हैं। ये सब देखकर लगता है कि सस्ती दवाओं की दुनिया में कहीं न कहीं लापरवाही है। गरीब



# मध्य प्रदेश में कफ सिरप का काला साया

परिवार जो पाँच-दस रुपये की सिरप पर भरोसा करते हैं, वे सबसे ज़्यादा प्रभावित होते हैं। क्या हमारी व्यवस्था उन्हें बचाने के लिए बनी है, या सिर्फ़ कागज़ों पर?

### उन मासूमों की अनकही दर्द भरी कहानियाँ

हर मौत के पीछे एक परिवार की कहानी है, जो सुनकर मन भारी हो जाता है। ये बच्चे खेलने-कूदने की उम्र के थे, लेकिन जहरीली दवा ने उनके सपनों को चूर कर दिया। चलिए, कुछ परिवारों की बात करते हैं—बिना ज़्यादा भावुक हुए, बस इतना कि हम समझें कि ये सिर्फ़ आँकड़े नहीं, जीवंत ज़िंदगियाँ थीं।

दिव्यांश यादवांशी, छह साल का ये बच्चा दूदी गाँव का रहने वाला था। उसके पिता प्रकाश एक छोटे किसान हैं। अगस्त के सोलह को दिव्यांश को हल्का बुखार आया—सौ डिग्री फ़ारेनहाइट। अगले दिन परासिया के डॉक्टर प्रवीण सोनी के पास गए। डॉक्टर ने इंडीक्लाव गोलियाँ और कोल्डिफ़्र सिरप लिखी—चार बार दिन में। कुछ दिन ठीक रहा, लेकिन उन्नीस को फिर बुखार चढ़ा। बाईस की रात को उल्टी शुरू हो गई। परिवार वाले छिंदवाड़ा ले गए, वहाँ से विव अस्पताल। इंजेक्शन और ग्लूकोज़ चढ़ाया गया। लेकिन चौबीस को पेशाब बंद। नागपुर के कलर्स अस्पताल में टेस्ट हुए—किडनी फेल। सात बार डायलिसिस चली, वेंटिलेटर पर रखा। लेकिन सात लाख रुपये का खर्च—ज़मीन बेची, गहने गिरवी रखे। फिर भी, सितंबर के दूसरे को दिव्यांश चला गया। प्रकाश कहते हैं, “सरकारी अस्पताल बेकार हैं। पशुओं वाले बेहतर हैं। हम गरीबों का क्या?” उनका बच्चा आधिकारिक लिस्ट में नहीं आया, तो चार लाख का मुआवज़ा भी न मिला।

अदनान खान, पाँच साल का, न्यूटन गाँव से। उसके चाचा साजिद ने बताया कि बाईस अगस्त को बुखार आया। डॉक्टर सोनी के पास गए—अनसेट एमडी, मेफ़्टाल पी, और कोल्डिफ़्र। पच्चीस को पेट दर्द, सताईस को आठ-दस बार उल्टी। जीवन ज्योति अस्पताल में एडमिट। रात भर पेशाब न आया। अड्डाईस को डॉक्टर प्रवीण नाहर के पास—क्रिएटिनिन लेवल हाई। नागपुर के एनएसएच अस्पताल में डायलिसिस। चार सेशन के बाद हालत बिगड़ी, वेंटिलेटर पर सात सितंबर तक। फिर सरकारी मेडिकल कॉलेज शिफ़्ट। सात सितंबर को अदनान गुजर गया। साजिद कहते हैं, “लैब वाले ने छोटा कंटेनर दिया, बोले जब पेशाब हो तो लाना। लेकिन रात भर इंतज़ार किया, कुछ न हुआ।” परिवार ने सब कुछ बेच दिया, लेकिन बच्चा न बचा।

विद्या देहरीया, तीन साल की, बेलगाँव से। वो तो अक्टूबर के पाँच को तीन साल की होने वाली थी। उन्तीस

अगस्त को बुखार। पिता माहेश काम पर थे, चाचा ले गए डॉक्टर सोनी के पास। कोल्डिफ़्र लिखी। तीन सितंबर को फिर बुखार, पेशाब बंद। नाहर डॉक्टर के पास—किडनी फेल। छिंदवाड़ा सिविल अस्पताल, फिर नागपुर मेडिकल कॉलेज। पाँच सितंबर को विद्या चली गई। माहेश कहते हैं, “वो मेरा इकलौता बच्चा था। परासिया में क्या हो रहा, किसी को पता न था। दवा ही ख़तरा थी, ये किसने सोचा?”

ऐसी कई कहानियाँ हैं। परिवार वाले निजी अस्पतालों पर निर्भर रहे, क्योंकि सरकारी सुविधाएँ कमज़ोर हैं। डॉक्टर नागपुर के थे, जिन्होंने बाईस सितंबर को डीईजी ज़हर का शक जताया। लेकिन तब तक कई बच्चे चले गए। ये कहानियाँ बताती हैं कि सस्ती दवा का भरोसा कितना भंग हो गया। माता-पिता ने जो किया, वो एक पिता-माँ का प्यार था—बस, सिस्टम ने साथ न दिया। क्या हम सोचते हैं कि ऐसे परिवारों के लिए बेहतर विकल्प कैसे बनें?

### सरकार का जवाब: कार्रवाई हुई, लेकिन देर से?

जब ये मौतें बढ़ीं, तो सरकार ने क्या किया? सबसे पहले, मध्य प्रदेश सरकार ने इनकार किया कि मौतें सिरप से जुड़ी हैं। सितंबर के आखिर में सैंपल लिए गए, लेकिन रिपोर्ट आने में देरी। अक्टूबर के तीसरे को तमिलनाडु की लैब ने conrm किया। उसके बाद एक्शन तेज़ हुआ। पाँच अक्टूबर को डॉक्टर प्रवीण सोनी के खिलाफ़ एफ़आईआर, और उसी रात गिरफ़्तारी। कंपनी सेसन फ़ार्मा के मालिक को भी पकड़ा गया। स्पेशल इन्वेस्टिगेशन टीम बनी। डिप्टी ड्रग कंट्रोलर शोभित कोस्टा सस्पेंड, इंस्पेक्टर गौरव शर्मा और शरद कुमार जैन पर कार्रवाई। स्टेट फूड एंड ड्रग कंट्रोलर दिनेश कुमार मौर्य ट्रांसफ़र।

मुख्यमंत्री मोहन यादव ने छह अक्टूबर को परिवारों से मिले। चार लाख रुपये का मुआवज़ा घोषित, इलाज़ का खर्च राज्य वहन करेगा। छिंदवाड़ा कलेक्टर ने तीन टीमें बनाई मदद के लिए। केरल, मध्य प्रदेश, तमिलनाडु में सिरप बैन। गुजरात में दो और सिरप रिकॉल। डब्ल्यूएचओ को आशवासन दिया कि एक्सपोर्ट नहीं हुए।

लेकिन ये सब देर से। परिवार कहते हैं कि सितंबर में ही अलर्ट होता, तो बचाव होता। कांग्रेस ने स्वास्थ्य मंत्री राजेंद्र शुक्ला का इस्तीफ़ा माँगा, और सीबीआई जाँच की डिमांड की। पब्लिक इंटरेस्ट लिटिगेशन सुप्रीम कोर्ट में दाखिल हुई—सीबीआई प्रोब, रेगुलेटरी फेलियर पर, और पूरे देश में हेल्थ क्राइसिस अलर्ट। लेकिन दस अक्टूबर को सुप्रीम कोर्ट ने खारिज कर दिया। कहा, राज्य स्तर पर जाँच चल रही है, पर्याप्त है। अर्दानी जनरल ने कहा कि पिटीशनर अखबार पढ़कर आया लगता है।

डॉक्टरों का गुस्सा भी फूटा। सोनी की गिरफ़्तारी के बाद परासिया में हड़ताल। इंडियन मेडिकल एसोसिएशन ने कहा, डॉक्टर दवा लिखते हैं, क्वालिटी चेक सरकार का काम। आठ अक्टूबर को साइलेंट रैली हुई। ये दिखाता है कि कार्रवाई हुई, लेकिन संतुलन कहाँ? डॉक्टरों को दोष देना आसान, लेकिन मैनुफैक्चरर और रेगुलेटर पर सख्ती ज़रूरी। सरकार ने कोशिश की, लेकिन शुरुआती लापरवाही ने नुक़सान बढ़ाया। क्या ये सीख बनेगी?

### पुरानी भूलें जो आज भी सताती हैं

ये पहली बार नहीं जब कफ सिरप ने बच्चों की जान ली। भारत में ऐसी घटनाएँ दशकों से हो रही हैं। सन् उन्नीस सौ छियासी में हरियाणा में सत्तर बच्चे मारे गए—डीईजी से। नब्बनवे में मुंबई में पैतालीस। दो हजार दो में गुजरात में अठारह। लेकिन सबसे बड़ा झटका दो हजार बाईस में लगा। गाम्बिया में छियासठ बच्चे, उज़्बेकिस्तान में साठचौंसठ, इंडोनेशिया में सौ से ज़्यादा—सब भारतीय सिरप से। वो सिरप भी डीईजी से ज़हरीले थे। डब्ल्यूएचओ ने अलर्ट किया, भारत ने रेगुलेशन टाइट किए, लेकिन घरेलू बाज़ार में ढील बनी रही।

क्यों होता है ये? भारत का फ़ार्मा उद्योग सत्तर छह बिलियन डॉलर का है, एक्सपोर्ट पर जोर। विदेशी बाज़ार सख़्त चेक करते हैं, लेकिन अंदरूनी छोटी कंपनियाँ बच जाती हैं। सीडीएससीओ ने हाल के सालों में सौ से ज़्यादा सिरप फेल पाए। लॉ है—कच्चा माल टेस्ट, सालाना इंस्पेक्शन—लेकिन भ्रष्टाचार और लापरवाही से लागू नहीं होता। गरीब इलाक़ों में सस्ती दवाएँ बिना चेक बिकती हैं। एक्सपर्ट कहते हैं, ये एक्सिडेंट नहीं, सिस्टम की कमजोरी है।

ये पुरानी भूलें आज की त्रासदी को दोहराती हैं। गाम्बिया वाली घटना के बाद भी, छोटे मैनुफैक्चरर अनदेखे रहे। अब डब्ल्यूएचओ फिर चेतावनी दे रहा—टेस्टिंग गैप्स हैं। क्या हम सीखेंगे, या अगली बार फिर वही गलती?

### सुधार की राह: सबकी ज़िम्मेदारी

अब सवाल ये कि आगे क्या? ये त्रासदी हमें सोचने पर मजबूर करती है। सबसे पहले, रेगुलेशन मज़बूत हों। हर फ़ैक्टरी का सालाना चेक, कच्चे माल की सख़्त टेस्टिंग। छोटी कंपनियों पर नज़र, घरेलू बाज़ार को एक्सपोर्ट जितना महत्व। दूसरा, डॉक्टरों को ट्रेनिंग—दवाओं की क्वालिटी चेक कैसे करें। तीसरा, सरकारी अस्पताल बेहतर हों—डायलिसिस, वेंटिलेटर जैसी सुविधाएँ हर ज़िले में।



# मां दुर्गा की महा कृपा के अद्भुत अनुभव

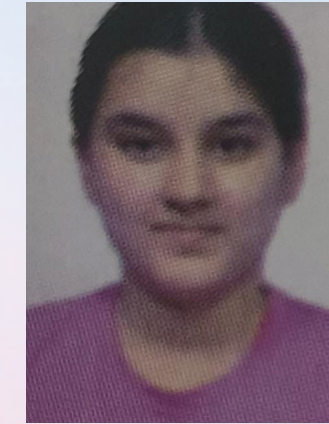


## करोड़ों में से किसी एक को होता है यह रोग मां दुर्गा के पाठ से हुआ समाप्त

जयपुर के श्री पवन कुमार शर्मा ने बताया कि मेरी छोटी पोती ध्रुवी शर्मा जो तीन वर्ष की है को जब बुराार होता था तब 103 डिग्री से ऊपर चला जाता था। उसके हाथ-पैर निष्क्रिय हो जाते थे और आंखें ठहर जाती थीं। उसके शरीर में कोई हरकत नहीं होती थी। ऐसा लगता था कि जैसे वह मर गई है। ऐसा कुछ मिनटों के लिए होता था। हम सब घबरा जाते थे। डाक्टर साहब ने बताया कि यह रोग करोड़ों में से किसी एक को होता है। यह खतरनाक दौरा होता है। हमने उसे जयपुर के सबसे बड़े अस्पताल जे. के. लोन में भी दिखाया था लेकिन कोई हल प्राप्त नहीं हुआ। एक दिन मैं पूरे परिवार के साथ वृंदावन समागम में गया लेकिन यहां भी अचानक उसे फिर से दौरा पड़ा। हम बहुत घबरा गए। जहां हम रुके हुए थे वहीं से रात्रि को ही सीधा अस्पताल लेकर जाना पड़ा। ध्रुवी को अस्पताल में भर्ती कर लिया गया। हम परम पूज्य सद्गुरुदेव जी से मन ही मन प्रार्थना कर रहे थे कि हमें समागम में बुलाओ। ऐसा सौभाग्य हुआ कि हम समागम में गए और गुरुदेव जी महाराज के स्टेज पर भी जाने का अवसर मिला। हमने विशेष कृपा ग्रहण की जिसके प्रभाव से और गुरुदेव जी के आशीर्वाद से वह ठीक है। अब उसे कोई दौरा नहीं पड़ता है।



## विदेश से ली एमबीबीएस की डिग्री अब कर रही है इंटरशिप



ऊना, हिमाचल प्रदेश के श्री बृजमोहन लाल ने बताया कि मेरी बेटी डाक्टर बनना चाहती थी। इसके लिए उसने परम पूज्य सद्गुरुदेव जी से बीज मंत्रों की कृपा ली थी। मैंने भी पाठ ग्रहण किया था। इसके प्रभाव से मेरी बेटी को यूकेन में एमबीबीएस में दाखिला मिल गया। 21 अगस्त 2021 में मेरी बेटी को एमबीबीएस की डिग्री मिल गई। इसके बाद मेरी बेटी ने भारत में इलिनजिबिलिटी टैस्ट (एफएमजीई) 2022 में पास कर लिया और अब वह दीन दयाल उपाध्याय अस्पताल (रिपन) में अपनी इंटरशिप कर रही है। यह सब दिव्य बीज मंत्रों के पाठ के प्रभाव से हुआ है।

## अस्थमा की समस्या से मिली राहत

इन्होंने बताया कि जैसे ही मौसम बदलता था, उन्हें अस्थमा की तकलीफ हो जाती थी। सांस लेने में कठिनाई के कारण वे बेहद परेशान और मानसिक रूप से अस्वस्थ महसूस करती थीं। पीजीआई में जांच कराने पर डॉ. वट्टो ने इसे अस्थमा की पुष्टि की थी। यह रोग सामान्यतः वायुमंडलीय बदलाव, धूल, प्रदूषण या एलर्जी के कारण उत्पन्न होता है और रोगी के जीवन को असहज बना देता है। लेकिन अद्भुत रूप से परम पूज्य गुरुदेव जी ने जो समागम में मां राधा कृष्ण जी का अवधान करवाया। उससे उन्होंने अनुभव किया कि सांस लेने में अब कोई तकलीफ नहीं रही और उन्हें गहरी राहत मिली। और उनकी यह समस्या पूरी तरह से ठीक हो गई।

## पुराने दर्द से मिली मुक्ति

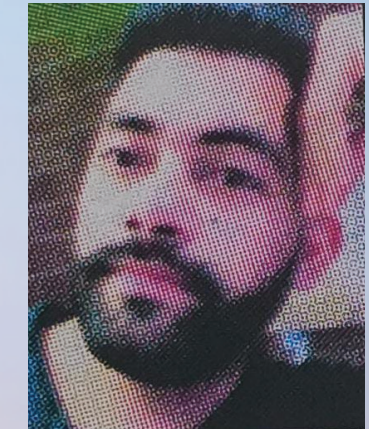
एक बहन ने बताया कि उनका पेट कई दिनों से दाईं तरफ से दर्द कर रहा था। साथ ही कंधों में लगातार पीड़ा बनी हुई थी और आज तो कमर में भी असहनीय दर्द लेने लगा था। इन सब कारणों से मानसिक तनाव भी बढ़ता जा रहा था। सामान्यतः इस प्रकार के दर्द गांसेपेशियों की जकड़न, पावन तंत्र की गड़बड़ी या नसों पर दबाव के कारण उत्पन्न होते हैं और जीवन की दिनचर्या को बाधित कर देते हैं। गुरुदेव द्वारा समागम में मां राधा कृष्ण जी के अवधान को करने से यह दर्द पूरी तरह समाप्त हो गया और वे बिल्कुल सामान्य महसूस करने लगीं।

## सिरदर्द व अनिद्रा की समस्या हुई पूरी तरह ठीक

एक भाई ने बताया कि उन्हें पिछले एक सप्ताह से कानिक हेडक की समस्या बनी हुई थी। लगातार सिरदर्द के कारण वे ठीक से नींद भी नहीं ले पा रहे थे, जिससे धकान और बेचोनी बढ़ती जा रही थी। आम तौर पर सिरदर्द तनाव, माइग्रेन, नींद की कमी या नसों के दबाव से उत्पन्न होता है और यह रोगी के मानसिक संतुलन को गहराई से प्रभावित करता है। समागम में मां राधा कृष्ण जी के अवधान से सिरदर्द पूरी तरह समाप्त हो गया है और अब वे गहरी शांति और सुकून का अनुभव कर रहे हैं।

## चेहरे का लकवा हुआ समाप्त

पटियाला, पंजाब की श्रीमती नाम कैलासो ने बताया कि मेरे बेटे गगनदीप सिंह को ब्रेन हैमरेज हो गया था। मैंने उसे 22 नवंबर को ब्रेन एंड मल्टीस्पेशलिटी हास्पिटल



22 नंबर फाटक, भूमिन्द्रा रोड पर डा सचदेवा को दिखाया था। वहां से उसका इलाज करवाया। समय कम था क्योंकि उसे इंग्लैंड जाना था। मैंने अपने बेटे के लिए पाठ किया। दवा और दुआ दोनों के प्रभाव से वह समय से पहले ही ठीक हो गया और फ्लाइट पकड़कर इंग्लैंड चला गया। उसे इंग्लैंड गये हुए एक साल हो गया है। वह भी पाठ करता है और उसे कोई समस्या नहीं है। गुरु जी की कृपा से और पाठ के प्रभाव हमारा पूरा परिवार सुखी है।

## आधी जीभ कटने के बाद भी जिंदा हूं

अल्सरोटिव कोलाइटिस और भयंकर जीभ कैंसर से मिली मुक्ति

जयपुर के श्री पवन कुमार शर्मा ने बताया कि मैं जयपुर के सबसे बड़े सरकारी अस्पताल सर्वांगनसिंह चिकित में कार्यरत था। 34 वर्ष मेडिकल विभाग में डायटीशियन के पद से 2011 में सेवानिवृत्त हुआ था। परम पूज्य सद्गुरुदेव जी महाराज से 2004 में बीज मंत्र का पाठ ग्रहण किया था। मुझे अल्सरोटिव कोलाइटिस हो गया था जो पाठ की कृपा से ठीक तो हो गया था लेकिन 2006 में पुनः जीभ का कैंसर हो गया। मेडिकल विभाग के अनुभव के कारण मैं

इस स्थिति से घबरा गया था। क्योंकि इस रोग का परिणाम मृत्यु ही होता है। मैंने ठाटा मेमोरियल कैंसर अस्पताल से इलाज करवाया क्योंकि सद्गुरु जी की आज्ञा है कि दवाइयां अवश्य लें। मेरी आधी जीभ काट दी गई और मेरी आयु केवल पांच वर्ष निर्धारित की गई। मैं पाठ करता रहा और प्रभु कृपा से कुछ ही समय में बिल्कुल ठीक हो गई। मैं सब कुछ खाने लगा और उच्चारण भी ठीक होने लगा। इतने वर्ष जीतने के बाद भी मैं कोई नहीं खाता और न कोई इलाज करवाता हूं। पाठ की कृपा से मैं बिल्कुल ठीक हूं और महत जीवन बिता रहा हूं। अल्सरोटिव कोलाइटिस और जीभ का कैंसर दोनों की ठीक हो गये, यह परम पूज्य सद्गुरुदेव जी की असीम कृपा है।





# गाजा शांति सम्मेलन: भारत की नई जिम्मेदारी

**गा**जा में चल रहे संघर्ष ने पूरी दुनिया को हिला दिया है। दो साल से ज्यादा समय हो गया जब हमारा और इजरायल के बीच जंग शुरू हुई थी। अब एक नई उम्मीद जगी है। मिस्र के शर्म अल-शेख में 13 अक्टूबर को एक बड़ा शांति सम्मेलन होने वाला है। इसकी मेजबानी कर रहे हैं अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप और मिस्र के राष्ट्रपति अब्देल फतह अल-सिसी। इस सम्मेलन में कई देशों के नेता आएंगे। खास बात यह है कि भारत को भी न्योता मिला है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को मिस्र के राष्ट्रपति सिसी ने आमंत्रित किया। लेकिन पीएम खुद नहीं जा रहे। उनके बजाय विदेश राज्य मंत्री कर्ति वर्धन सिंह भारत का प्रतिनिधित्व करेंगे। ये खबर भारत के लिए बड़ी है। क्यों? क्योंकि ये दिखाता है कि भारत अब मध्य पूर्व की कूटनीति में कितना महत्वपूर्ण हो गया है। हमारा देश हमेशा से शांति का पक्षधर रहा है। लेकिन अब ये भूमिका और मजबूत हो रही है। सम्मेलन से पहले हमारा ने कहा है कि वो इजरायली बंधकों को रिहा करेगा। लेकिन बातचीत में मुश्किलें भी बताई हैं। ये सब कुछ मिलाकर एक नया दौर शुरू हो सकता है। आइए, इसकी गहराई समझें।

ये सम्मेलन सिर्फ एक बैठक नहीं। ये गाजा में युद्ध खत्म करने का पहला कदम हो सकता है। सम्मेलन में इजरायल-हमास युद्धविराम के पहले चरण पर हस्ताक्षर होंगे। मिस्र की मध्यस्थता में बातें हो रही हैं। हमारा ने कहा है कि वो औपचारिक हस्ताक्षर से दूर रहेगा, लेकिन चर्चा में हिस्सा लेगा। भारत का न्योता मिलना कोई संयोग नहीं। हमारा देश इजरायल का करीबी दोस्त है। साथ ही, फिलिस्तीन के हितों का भी ख्याल रखता है। ये संतुलन भारत की ताकत है। सम्मेलन में भारत सुरक्षित इजरायल और एक मजबूत फिलिस्तीनी राज्य की बात करेगा। ये हमारी वैश्विक छवि को नई ऊंचाई देगा। लेकिन सवाल ये है कि क्या ये शांति टिक पाएगी? या फिर ये सिर्फ एक अस्थायी राहत होगी? इन सवालों के जवाब ढूँढ़ने के लिए हमें और गहराई में जाना होगा।

## ट्रंप-सिसी का न्योता: भारत कैसे बनेगा मुख्य खिलाड़ी

अमेरिका और मिस्र के राष्ट्रपतियों ने आखिरी पल में भारत को बुलाया। ये न्योता प्रधानमंत्री मोदी के नाम था। लेकिन व्यस्तताओं के कारण वो खुद नहीं जा पा रहे। इसके बजाय कर्ति वर्धन सिंह वहां भारत की आवाज बनेंगे। ये फैसला सोच-समझकर लिया गया लगता है। सिंह मध्य पूर्व के मुद्दों पर अच्छी पकड़ रखते हैं। सम्मेलन में बीस से ज्यादा देशों के नेता आएंगे। ब्रिटेन के पीएम कीर स्टार्मर, इटली की जॉर्जिया मेलोनी और पाकिस्तान के शहबाज शरीफ भी शामिल होंगे। ईरान को भी बुलाया गया है, लेकिन उसकी पुष्टि नहीं हुई। ट्रंप ने कहा है कि ये शिखर सम्मेलन मध्य पूर्व में शांति लाएगा। सिसी की भूमिका अहम है, क्योंकि मिस्र हमारा और इजरायल के बीच पुल का काम कर रहा है।

भारत का यहां आना स्वाभाविक है। हमारा देश मध्य पूर्व से गहरा रिश्ता रखता है। इजरायल से रक्षा और तकनीक का सहयोग मिलता है। मिस्र और अन्य अरब देशों से व्यापार। सम्मेलन में भारत मानवीय सहायता पर जोर देगा। गाजा का पुनर्निर्माण में हमारी भूमिका हो सकती है। ट्रंप के शांति प्लान में भारत को गाजा के फिर से बनाए



जाने का नेतृत्व करने का प्रस्ताव है। ये भारत की निष्पक्ष छवि को मजबूत करेगा। लेकिन चुनौतियां भी हैं। हमारा ने बातचीत में कठिनाइयों का जिक्र किया है। क्या भारत इनके बीच संतुलन बना पाएगा? ये सवाल सोचने लायक है। हमारा इतिहास देखें तो नेहरू जी के समय से भारत ने फिलिस्तीन का साथ दिया। लेकिन मोदी जी के नेतृत्व में इजरायल से दोस्ती बढ़ी। अब ये दोनों को जोड़ना हमारी जिम्मेदारी है। सम्मेलन से भारत की कूटनीति नई दिशा ले सकती है। ये न सिर्फ क्षेत्रीय शांति के लिए अच्छा होगा, बल्कि हमारी वैश्विक साख भी बढ़ेगी।

सम्मेलन की तैयारी तेज है। शर्म अल-शेख में सुरक्षा के कड़े इंतजाम हैं। ट्रंप और सिसी मिलकर योजना बना रहे हैं। भारत का प्रतिनिधिमंडल वहां जाकर हमारी चिंताओं को रखेगा। जैसे कि गाजा में मानवीय संकट खत्म हो। वहां के लोग बेघर हो गए हैं। अस्सी प्रतिशत आबादी विस्थापित है। भारत ने पहले भी सहायता भेजी है। अब ये मौका है कि हम और आगे बढ़ें। लेकिन ये सब आसान नहीं। मध्य पूर्व की राजनीति जटिल है। ईरान, सऊदी अरब और तुर्की जैसे देशों के हित टकराते हैं। भारत को इन सबके बीच अपना रास्ता बनाना होगा। ये सम्मेलन भारत के लिए एक परीक्षा है। पास करने पर हम एक बड़ा कदम रखेंगे।

## हमारा की घोषणा: बंधक रिहाई से पहले चुनौतियां

सम्मेलन से ठीक पहले हमारा ने एक बड़ा ऐलान किया। संगठन ने कहा कि वो इजरायली बंधकों को रिहा करेगा। दो साल पहले सात अक्टूबर को हमारा ने इजरायल पर हमला किया था। तब चालीस से ज्यादा बंधक ले लिए गए थे। अब बाकी बतीस बंधक जिंदा बताए जा रहे हैं। हमारा ने कहा कि सोमवार सुबह तक रिहाई शुरू हो जाएगी। ये युद्धविराम समझौते का हिस्सा है। इजरायल ने भी सहमति दी है। बदले में इजरायल

सत्रह सौ से ज्यादा फिलिस्तीनी कैदियों को छोड़ेगा। मिस्र की मध्यस्थता में ये सौदा हुआ। लेकिन हमारा ने चेतावनी भी दी। कहा कि बातचीत में मुश्किलें आएंगी। संगठन औपचारिक हस्ताक्षर से दूर रहेगा। सिर्फ चर्चा में हिस्सा लेगा।

ये कदम उम्मीद जगाता है। गाजा में युद्धविराम अब तक टिका हुआ है। इजरायली सेना ने कुछ इलाकों से पीछे हटना शुरू कर दिया। मानवीय सहायता के ट्रक अंदर घुस रहे हैं। लेकिन सवाल ये है कि क्या ये स्थायी होगा? हमारा के नेता कहते हैं कि इजरायल की शर्तें कड़ी हैं। इजरायल का कहना है कि हमारा को पूरी तरह हटना जरूरी। बीच में ये फंसाव है। भारत के नजरिए से देखें तो ये आतंकवाद के खिलाफ लड़ाई है। हम हमारा को आतंकी मानते हैं। लेकिन शांति के लिए बातचीत जरूरी। सम्मेलन में ये मुद्दे उठेंगे। कर्ति वर्धन सिंह वहां भारत की बात रखेंगे। कि बंधकों की सुरक्षित रिहाई हो। और गाजा में शांति बने रहे।

गाजा की हालत दिल दहला देने वाली है। संयुक्त राष्ट्र कहता है कि इलाका रहने लायक नहीं बचा। बीस लाख लोग बिना घर के। भोजन, पानी की कमी। भारत ने हमेशा मानवीय सहायता दी है। अब सम्मेलन में हम पुनर्निर्माण की बात करेंगे। लेकिन हमारा की चेतावनी सोचने पर मजबूर करती है। क्या रिहाई के बाद फिर तनाव बढ़ेगा? या ये नया दौर शुरू होगा? ये सवाल सिर्फ नेताओं के नहीं, आम लोगों के भी हैं। इजरायल के परिवार बंधकों की प्रतीक्षा में हैं। फिलिस्तीन के लोग शांति चाहते हैं। बीच में भारत जैसा देश पुल बन सकता है। हमारी नीति हमेशा संतुलित रही। आतंकवाद की निंदा, लेकिन निर्दोषों की रक्षा। ये सम्मेलन उसी दिशा में कदम है।

## भारत के हित: ऊर्जा सुरक्षा से लेकर प्रवासी भाइयों की चिंता

भारतीय पाठकों के लिए ये सम्मेलन खास क्यों?

सबसे पहले ऊर्जा सुरक्षा। मध्य पूर्व से भारत को तेल-गैस आता है। गाजा का संघर्ष अगर बढ़ा तो कीमतें आसमान छू सकती हैं। हमारी अर्थव्यवस्था प्रभावित होगी। दूसरे, हमारे प्रवासी भाई। लाखों भारतीय वहां काम करते हैं। सऊदी, यूएई, मिस्र में। युद्ध फैला तो उनकी जान को खतरा। भारत सरकार हमेशा उनकी सुरक्षा सुनिश्चित करती है। सम्मेलन में ये मुद्दा उठेगा। तीसरा, आतंकवाद के खिलाफ लड़ाई। हमारा जैसी ताकतें कश्मीर में भी सक्रिय हैं। जयश-ए-मोहम्मद और लश्कर से हाथ मिला चुके। भारत का रुख साफ है। आतंकवाद को कभी बख्शा नहीं जाएगा। लेकिन शांति से ही इसे रोका जा सकता है।

भारत की कूटनीति में मध्य पूर्व अहम है। हम इजरायल से हथियार लेते हैं। फिलिस्तीन को सहायता देते हैं। ये संतुलन हमारी ताकत। मोदी जी ने कहा है कि सुरक्षित इजरायल और मजबूत फिलिस्तीन दोनों जरूरी। सम्मेलन में भारत ये आवाज बुलंद करेगा। गाजा के पुनर्निर्माण में हम नेतृत्व ले सकते हैं। ये न सिर्फ मानवीय होगा, बल्कि आर्थिक फायदा भी। भारतीय कंपनियां वहां काम करेंगी। नौकरियां पैदा होंगी। लेकिन चुनौतियां हैं। ईरान का असर, क्षेत्रीय प्रतिद्वंद्विता। भारत को सावधानी से कदम रखना होगा। हमारी नीति 'सभी के साथ' है। किसी से दुश्मनी नहीं। ये सम्मेलन भारत को वैश्विक मंच पर नई पहचान देगा।

प्रवासी भारतीयों की बात करें। खाड़ी देशों में करीब नौ करोड़ भारतीय हैं। उनका भला हमारी प्राथमिकता। युद्ध से पलायन बढ़ा तो समस्या। सम्मेलन में भारत ये सुनिश्चित करेगा कि सहायता पहुंचे। ऊर्जा के मोर्चे पर, हम विविधीकरण कर रहे हैं। लेकिन मध्य पूर्व अनदेखा नहीं। आतंकवाद का कनेक्शन गहरा। हमारा का कश्मीर से रिश्ता खतरे की घंटी। भारत का अनुभव यहां काम आएगा। हमने कई आतंकी संगठनों को हराया। शांति से ही स्थायी समाधान। ये सम्मेलन भारत के हितों को मजबूत करेगा। लेकिन ये सिर्फ हित नहीं, नैतिक जिम्मेदारी भी। दुनिया देख रही है कि भारत कैसे कदम रखता है।

## नई उम्मीदें: भारत की वैश्विक यात्रा का नया अध्याय

गाजा शांति सम्मेलन भारत के लिए एक मोड़ है। हम निष्पक्ष मध्यस्थ बन सकते हैं। ट्रंप-सिसी की मेजबानी में हमारी भूमिका छोटी नहीं। कर्ति वर्धन सिंह वहां जाकर भारत की सोच रखेंगे। शांति, मानवीय सहायता, पुनर्निर्माण। ये सब हमारी प्राथमिकताएं। लेकिन सवाल बाकी हैं। क्या हमारा रिहाई पूरी करेगा? क्या इजरायल पीछे हटेगा? क्या क्षेत्रीय शक्तियां सहयोग करेंगी? ये जवाब समय देगा। लेकिन भारत की कोशिश साफ है। शांति का रास्ता।

हमारा इतिहास गवाह है। संयुक्त राष्ट्र में हमने फिलिस्तीन का साथ दिया। अब इजरायल से रणनीतिक साझेदारी। ये बदलाव हमें मजबूत बनाता है। सम्मेलन से भारत की छवि एक जिम्मेदार शक्ति की बनेगी। ऊर्जा, प्रवासी, आतंकवाद—सबके हित सुरक्षित। लेकिन ये सिर्फ भारत का नहीं, पूरी दुनिया का सवाल है। क्या मध्य पूर्व में शांति संभव? भारत जैसा देश जवाब दे सकता है। ये सम्मेलन एक शुरुआत है। आगे की राह लंबी, लेकिन उम्मीद भरी। आइए, सोचें कि हम कैसे योगदान दें। शांति की कामना के साथ।



# विज्ञान, शब्द और साहस

## 2025 के नोबेल से मिली नई सीख



@ शोभित यादव

**क**ल्पना कीजिए कि एक प्रयोगशाला, जहां सफेद कोट पहने वैज्ञानिक महीनों तक एक विचार के पीछे जुटे रहते हैं। कहीं एक किताब का पन्ना पलटते हुए नई सोच जन्म लेती है, तो कहीं सूक्ष्मदर्शी के नीचे कोई अनदेखी दुनिया नजर आती है।

यहीं से शुरू होती है बदलाव की कहानी। इंसान की जिज्ञासा, मेहनत और दृढ़ निश्चय जब मिलते हैं, तो नई दिशाएं बनती हैं। इस 2025 के नोबेल पुरस्कार इन्हीं अद्भुत प्रयासों को सलाम करते हैं। इस वर्ष के विजेताओं ने विज्ञान, साहित्य और समाज को नई दृष्टि दी है।

### शरीर की रक्षा का नया रहस्य

चिकित्सा के क्षेत्र में इस वर्ष का नोबेल पुरस्कार तीन वैज्ञानिकों मैरी ब्रंको, फ्रेड राम्सेल और शिमोन सकागुची को मिला है। इन तीनों ने शरीर की प्रतिरक्षा प्रणाली (इम्यून सिस्टम) के एक महत्वपूर्ण भाग की खोज की, जिसे 'रेगुलेटरी टी कोशिकाएं' कहा जाता है। ये कोशिकाएं हमारे शरीर की रक्षा प्रणाली को संतुलित रखती हैं। जब शरीर किसी संक्रमण से लड़ता है, तो कभी-कभी यही प्रणाली गलती से अपने ही अंगों पर हमला करने लगती है। ऐसी स्थिति को ऑटोइम्यून रोग कहा जाता है। यह कोई एक बीमारी नहीं, बल्कि लगभग अस्सी से अधिक बीमारियों का समूह है—जैसे टाइप-1 डायबिटीज, गठिया, मल्टीपल स्क्लेरोसिस और ल्यूपस।

रेगुलेटरी टी कोशिकाएं इस गलती को रोकने का काम

करती हैं। इस खोज से उन बीमारियों के उपचार की नई संभावना बनी है जिनसे दुनिया भर में करोड़ों लोग पीड़ित हैं। वैज्ञानिकों का कहना है कि यदि इन कोशिकाओं को सही दिशा में सक्रिय किया जाए, तो शरीर स्वयं को हानि पहुंचाना बंद कर सकता है। यह खोज चिकित्सा विज्ञान के इतिहास में एक मील का पत्थर मानी जा रही है।

### क्वांटम प्रभाव केवल सूक्ष्म कणों तक सीमित नहीं

भौतिकी का नोबेल पुरस्कार इस साल जॉन क्लार्क, मिशेल देवोरेट और जॉन मार्टिनिस को प्रदान किया गया है।

इन वैज्ञानिकों ने यह सिद्ध किया कि क्वांटम प्रभाव केवल सूक्ष्म कणों तक सीमित नहीं हैं, बल्कि यह बड़े विद्युत परिपथों में भी देखा जा सकता है। पहले तक यह माना जाता था कि क्वांटम सिद्धांत केवल परमाणु और इलेक्ट्रॉन जैसी अत्यंत सूक्ष्म वस्तुओं पर लागू होता है। किंतु इन वैज्ञानिकों ने यह दिखाया कि वही प्रभाव बड़ी प्रणालियों में भी संभव है। यही खोज आधुनिक क्वांटम संगणना अर्थात् क्वांटम कंप्यूटिंग की नींव बनी। क्वांटम कंप्यूटर पारंपरिक कंप्यूटरों की तुलना में लाखों गुना तीव्र गति से काम करते हैं। इनकी सहायता से अत्यंत जटिल गणनाएं कुछ ही क्षणों में की जा सकती हैं। इस खोज से भविष्य में सुरक्षित डिजिटल संचार और तेज कंप्यूटर तकनीक के नए द्वार खुलेंगे। यह कहा जा सकता है कि आने वाले युग की तकनीकी क्रांति इन प्रयोगों से ही संभव होगी।

### पर्यावरण के क्षेत्र में नई संभावनाएं खुली

रसायन विज्ञान का नोबेल पुरस्कार इस बार तीन वैज्ञानिकों सुसुमु कितागावा, रिचर्ड रॉबसन और ओमर यागी को मिला है। इन वैज्ञानिकों ने धातु और जैविक यौगिकों से बनी नई संरचनाओं का निर्माण किया जिन्हें 'मेटल-ऑर्गेनिक फ्रेमवर्क्स' कहा जाता है।

ये सूक्ष्म संरचनाएं जाल की तरह होती हैं, जो गैसों को पकड़ सकती हैं, पानी को सोख सकती हैं और ऊर्जा को संचित कर सकती हैं। इनका उपयोग वातावरण से कार्बन डाइऑक्साइड हटाने, स्वच्छ जल प्राप्त करने और स्वच्छ ऊर्जा संग्रहित करने में किया जा सकता है। इन संरचनाओं के कारण पर्यावरण संरक्षण और स्वच्छ प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में नई संभावनाएं खुली हैं। आज जब पूरी दुनिया जलवायु परिवर्तन की चुनौती से जूझ रही है, तब यह खोज उम्मीद की नई किरण है। आने वाले वर्षों में यह तकनीक ऊर्जा संकट को दूर करने में अहम भूमिका निभा सकती है।

### साहित्य में संवेदना की विजय

साहित्य का नोबेल पुरस्कार इस वर्ष हंगरी के लेखक लास्ज़लो को मिला है। उनकी कहानियां अत्याचार और भय के बीच भी इंसानियत और आशा को जीवित रखने की मिसाल पेश करती हैं। उन्होंने अपने लेखन से दिखाया कि कला केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि समाज की आत्मा को जीवित रखने की शक्ति है।

उनके शब्द हमें यह याद दिलाते हैं कि भय और अन्याय के दौर में भी सच्चाई और संवेदना की ज्योति बुझती नहीं।

उनका लेखन यह साबित करता है कि शब्द किसी भी हथियार से अधिक प्रभावशाली हो सकते हैं।

### शांति की राह पर डटी एक महिला

इस वर्ष का नोबेल शांति पुरस्कार मारिया मचाडो को मिला है। उन्होंने बीस वर्षों तक तानाशाही शासन के खिलाफ लोकतंत्र की लड़ाई लड़ी। जेल, धमकियां और अत्याचार सहते हुए भी वे पीछे नहीं हटीं।

मारिया ने सुमाते नामक संगठन की स्थापना की, जो निष्पक्ष चुनाव और नागरिक अधिकारों की रक्षा के लिए काम करता है। उनकी दृढ़ता ने न केवल उनके देश में, बल्कि पूरे लैटिन अमेरिका में लोकतांत्रिक मूल्यों की चेतना को मजबूत किया है। उनकी कहानी यह सिखाती है कि साहस और निष्ठा किसी भी व्यवस्था को बदल सकते हैं।

### बदलाव की जड़ में सवाल और जिज्ञासा

सन 2025 के नोबेल पुरस्कार हमें यह याद दिलाते हैं कि बड़ा परिवर्तन किसी एक क्षण में नहीं होता। वह तब शुरू होता है जब कोई व्यक्ति सवाल पूछता है, नई दिशा में सोचता है और हार नहीं मानता। किसी ने शरीर की कोशिकाओं में उम्मीद खोजी, किसी ने सर्किटों में भविष्य देखा, किसी ने शब्दों में इंसानियत को बचाया और किसी ने लोकतंत्र की लौ को जलाए रखा। इन सबके केंद्र में एक ही बात है ज्ञान, जिज्ञासा और साहस। दुनिया को बदलने के लिए बड़े संसाधन नहीं, बल्कि सच्ची सोच और अडिग इच्छाशक्ति की आवश्यकता होती है।



## दुर्गापुर गैंगरेप केस के तीनों आरोपियों को 10 दिन की पुलिस हिरासत

# ममता बोलीं- लड़कियों को रात में बाहर नहीं घूमना चाहिए

@ धीरज कुमार

**क**भी-कभी किसी शहर का अंधेरा सिर्फ सूरज ढलने से नहीं होता बल्कि तब होता है जब वहां इंसानियत मर जाती है। पश्चिम बंगाल के औद्योगिक शहर दुर्गापुर में 10 अक्टूबर की रात कुछ ऐसी ही थी। जब एक मेडिकल कॉलेज की छात्रा के साथ जो हुआ, उसने पूरे प्रदेश को झकझोर कर रख दिया।

दुर्गापुर के शोभापुर इलाके में स्थित एक मेडिकल कॉलेज की छात्रा उस रात अपने दोस्त के साथ डिनर के लिए निकली थी। रात के करीब नौ बजे का वक्त था। दोनों कैम्पस से पैदल ही निकले थे। शहर का ये इलाका बिल्कुल किनारे पर है जहां खेत हैं, झाड़ियां हैं, और वो सुनसान सड़कें जिन पर स्ट्रीट लाइटें तो लगी हैं, पर जलती नहीं।

वो रास्ता अंधेरे में डूबा हुआ था। दोनों धीरे-धीरे आगे बढ़ रहे थे कि अचानक पीछे से कुछ परछाइयाँ उन पर झपटीं। पांच युवक बाइक से आए और रास्ता रोक लिया। उन्होंने पहले छात्रा का मोबाइल छीना और धमकी दी कि पांच हजार रुपये दो, तभी मोबाइल मिलेगा। लड़की ने हिम्मत जुटाकर कहा, मेरे पास पैसे नहीं हैं। जवाब मिला तो कल आना, पैसे लाना और मोबाइल ले जाना।

पर बात यहीं नहीं थमी। कुछ ही पल में वही पांचों युवक लड़की के बाल पकड़कर घसीटने लगे। पास के जंगल की ओर ले गए। और फिर जो हुआ उसे शब्दों में बयां करना नामुमकिन है। लड़की के साथ सामूहिक दुष्कर्म हुआ।

उसका दोस्त जो उसके साथ था वो डर के मारे भाग गया।

### घटना कॉलेज से सिर्फ एक किलोमीटर दूर

वारदात कॉलेज कैम्पस से मुश्किल से एक किलोमीटर दूर हुई। आसपास के लोगों ने जब शोर सुना तो पुलिस को खबर दी। पुलिस मौके पर पहुंची, तब तक आरोपी फरार हो चुके थे। अगले दिन, पुलिस ने छानबीन शुरू की और मोबाइल ट्रैसिंग के जरिए पांचों आरोपियों तक पहुंच बनाई।

### गिरफ्तार हुए आरोपियों के नाम हैं

अपू बाउरी, फिरदौस शेख, शेख रियाउजुद्दीन उर्फ मंटू, नसीरुद्दीन शेख और शेख सफीकुल। सभी बिजड़ा गांव के रहने वाले हैं, जो कॉलेज से महज दो किलोमीटर की दूरी पर है। पुलिस ने बताया कि लड़की का मोबाइल इन्हीं के पास से बरामद हुआ।

### “अस्पताल ने मिलने नहीं दिया, पुलिस ने FIR नहीं दी”

पीड़िता के पिता जो ओडिशा में रहते हैं उनको रात करीब 10 बजे बेटी की दोस्त का फोन आया। वे उसी वक्त रवाना हो गए। सुबह जब वे अस्पताल पहुंचे, तो उनकी



आंखों के सामने बेटी ICU में पड़ी थी। हमें अंदर जाने तक नहीं दिया गया, पिता ने कहा। जब हमने विरोध किया, तब जाकर मिलने दिया। पुलिस ने हमारी एक न सुनी। FIR की कॉपी तक नहीं दी। बाद में जब ओडिशा पुलिस ने दबाव डाला, तब जाकर कार्रवाई हुई। पिता का एक और सवाल है कि वो लड़का जो मेरी बेटी के साथ था, वो भाग क्यों गया? उसने किसी को कॉल क्यों नहीं किया? क्या डर इतना बड़ा था कि इंसानियत भी पीछे छूट गई?”

### “हमारे बच्चे बेगुनाह हैं”

गांव में सन्नाटा, परिवारों का दावा है कि हमारे बच्चे बेगुनाह हैं। आरोपियों के गांव बिजड़ा में पुलिस की मौजूदगी बढ़ा दी गई है। गांव में तनाव है।

गांव वालों का कहना है कि पुलिस ने बिना सबूत के गिरफ्तारी की है। आरोपियों के परिवार कह रहे हैं कि हमारे बच्चे निर्दोष हैं, उन्हें फंसाया जा रहा है। वहीं पुलिस का कहना है कि सभी सबूत इकट्ठे किए जा रहे हैं, और मेडिकल रिपोर्ट आने के बाद आरोप पक्के हो जाएंगे।

### राजनीति ने भी नहीं छोड़ा मोका

जैसे ही मामला सामने आया, राजनीतिक बयानबाजी



था, आज वही अस्पताल के बेड पर जिंदगी से जंग लड़ रही है।

वो लड़की जो दूसरों का इलाज करने वाली थी, आज खुद जख्मों से भरी है। उसके पिता की आंखों में बस एक सवाल है क्या हमें न्याय मिलेगा?

### सिस्टम पर सवाल रोशनी आई, लेकिन अंधेरा अब भी बाकी है

घटना के बाद कॉलेज और आसपास की सड़क पर स्ट्रीट लाइटें ठीक कर दी गई हैं। अब वहां रोशनी है। पर सवाल ये है कि क्या ये रोशनी उस अंधेरे को मिटा सकती है जो इंसानियत के भीतर फैल चुका है?

हर बार की तरह इस बार भी पुलिस ने कार्रवाई जारी है कहकर अपनी जिम्मेदारी पूरी कर दी। पर ये जारी कार्रवाई कब तक चलेगी? कब तक कोई बेटी सड़क पर डरते हुए चलेगी? कब तक किसी पिता को अपनी बच्ची की लाश देखने से पहले अस्पताल के गेट पर रोका जाएगा?

दुर्गापुर की वो सड़क अब जगमग कर रही है, लेकिन उस रात का अंधेरा अब भी जिंदा है। लोगों के दिलों में, शहर की हवा में, और उस पिता की आंखों में जो अब भी अपनी बेटी के लिए इंसाफ मांग रहा है। कभी-कभी रोशनी से ज्यादा जरूरत होती है जवाबदेही की। क्योंकि जब इंसानियत बुझ जाती है, तब सिर्फ शहर नहीं, पूरा समाज अंधेरे में चला जाता है।

शुरू हो गई। बिजेपी नेताओं ने राज्य सरकार और पुलिस पर सवाल उठाए। उन्होंने कहा कि पुलिस ने अब तक प्रेस कॉन्फ्रेंस तक नहीं की। गिरफ्तारी किस आधार पर हुई, ये भी साफ नहीं है। कानून व्यवस्था पूरी तरह फेल है। वहीं, मुख्यमंत्री ममता बनर्जी के बयान ने विवाद और बढ़ा दिया। उन्होंने कहा रात देर से लड़कियों को बाहर नहीं निकलना चाहिए। उन्हें अपनी सुरक्षा का ध्यान रखना चाहिए। इस बयान ने कई महिला संगठनों को नाराज कर दिया।

### डॉक्टर बनने का सपना, अब जिंदगी की जंग

जिस लड़की के पास स्टेथोस्कोप उठाने का सपना



## बचाना होगा

गाय अब  
सिर्फ पालतू पशु नहीं

अब वह  
एक राजनैतिक हथियार है

जिसका हिंसात्मक प्रयोग  
होता है चुनावों में

सांप्रदायिकता फैलाने में  
अपने विरोधियों को धूल चटाने में

हिंदू-मुस्लिम को लड़ने-लड़ाने में  
आज मैंने देखा उसे

सड़क पर घूम रही थी  
हैं वहीं चार पैरों वाली

पालतू गाय  
वह निगल रही थी

सड़कों पर फेंकी  
फल और सब्जियाँ

कभी-कभी  
पालीथीन में फेंकी जूठन में फंसी दिखी गाय

अब बहुत कम  
बची है हरियाली

गाय के लिए  
विकास पुत्र ने छीन लिया है इनसे

घास का मैदान और पोखर  
जैसे बच्चों से छिन लिए गए खिलौने

खेल के मैदान पाट दिए गए  
अब वे इंडोर हो गए

बचपन ने धाम लिया गैजेट  
दादा दादी, नाना-नानी की कहानियों खो गई

बच्चों की शिशुता की जगह  
इंस्टॉल हो गई है धूर्तता

ठीक वैसे ही  
जैसे कारपोरेट घरानों ने

गौशालों पर चला दिया हो बुलडोजर  
लगता है

कुछ भी नहीं बचा अब  
इस दुनिया में

नहीं बचा बच्चों के लिए  
शरारतें

मैदान  
कहानियाँ

बड़े और बूढ़े  
नहीं बचा मवेशियों के लिए

घास  
पानी

और हरियाली  
इस अकाल बेला में

बचाना होगा हमें  
हरे-भरे मैदान

खिलौने  
हैंसी

और सबसे अंत  
कृत्रिमता के बदले

**जीवन की समरसता**

## बहरेपन के बरक्स मेढ़क

एक लंबे समय की चुप्पी के बाद  
जब आप पूरी रात

अपनी खामोशियों के बीच सुनते हैं एक आवाज़  
बरसाती मेढ़कों की

जो अक्सर बारिश के बाद  
रात के गहरे सन्नाटे में

करते हैं टर्-टर्-टर्  
निस्तब्धता और काली रात में

एक हस्तक्षेप की तरह  
होते हैं दारिद्र्य

मथते हैं एक विचार बन  
करते हैं मुक्त

अकेलेपन के भय से  
ये आपको उकसाते हैं बोलने के लिए

भयावर रात में उनकी निर्भय टर्-टर् है सिखाती  
कैसे सब कुछ है बोल देना

जब आपको बोलने की हो मनाही  
जब पूरे देश में हो पसरा सन्नाटा

कुर्सी से चिपके नेता  
कर रहे हो मनमानी

जब राजा का भेष धर  
चुराने लगे हैं वे जन धन

ऐसे में टर्-टर् देता है सारस  
सब कुछ कर देने का

बिना भय के अंधेरे के साम्राज्य में घुसपैठ है टर्-टर्  
कल पूरी रात

इन मेढ़कों के टर्-टर् के साथ  
मैं भी बुदबुदा रही थी नींद में

बहुत कुछ अनकहा, अनसुना और अनसुलझा  
जिसे बयां नहीं किया था अब तक

समय की ताक पर  
रख दिया था जिन शब्दों को

आज वे बारिश बन  
बरस रहे हैं बूँद-बूँद

टूट रहा है गूंगेपन का तिलिस्म  
और

मेढ़क का टर्-टर्  
भेद रहा है राष्ट्रीय बहरेपन को

**मधु सिंह**

नई पीढ़ी की कवयित्री



# गांव के युवाओं के लिए सुनहरा मौका जल्द शुरू करें ये 4 बिजनेस

@ सौम्या चौबे

**श**हरों का तो तेजी से विकास हो रहा है लेकिन गाँव देहात की दशा दिन प्रति दिन खराब होती जा रही है। शहर विकास और औद्योगिकीकरण की ओर बढ़ रहे हैं जबकि गाँव में आज लोगों की आय के बहुत कम साधन हैं। गाँव में रहने वाले युवा रोजगार की तलाश में शहरों का रुख कर रहे हैं। उन्हें ये बताने वाले बहुत कम लोग हैं कि गाँव में business कैसे करें इसकी असली वजह है गाँव में जीने के लिए जरूरी मूलभूत सुविधाओं का ना होना। लेकिन आपको चिंता करने की बहुत ज्यादा जरूरत नहीं है।

इससे निपटने के लिए सरकार गाँव के लोगों को गाँव में ही व्यापार करने के लिए प्रेरित कर रही है। गाँव की दशा तभी बदलेगी जब गाँव के युवा गाँव में रहकर व्यापार करेंगे और अपने साथ-साथ अन्य लोगों को भी रोजगार देंगे। इसलिए आज मैं आपको बताने जा रहा हूँ कि ऐसे कौन-कौन से व्यापार हैं जो बहुत आसानी से गाँव में किये जा सकते हैं।

### गांव में चलने वाले Business

Village best business: वैसे तो कोई भी बिजनेस करने का प्लान किया जा सकता है लेकिन बिजनेस करने से पहले वहाँ की परिस्थिति का आकलन करना बहुत जरूरी होता है। बिना सोचे समझे व्यापार करने से ज्यादातर मामलों में घाटा ही होता है। शहर में व्यापार की ज्यादा संभावना होती है क्योंकि वहाँ संसाधन ज्यादा होते हैं लेकिन ऐसा नहीं है कि गाँव में व्यापार नहीं किया जा सकता। गाँव में भी बहुत अच्छा और मोटी कमाई वाला व्यापार किया जा सकता है।

गाँव में डेयरी, ऑर्गेनिक खेती, बीज और खाद की दुकान और आटा चक्की ये कुछ ऐसे बिजनेस हैं जो लंबे समय तक चल सकते हैं और अच्छा मुनाफा भी दे सकते हैं। आइये इन सभी बिजनेस के बारे में एक-एक करके विस्तार से जानते हैं।

### 1- डेयरी बिजनेस



ग्रामीण क्षेत्रों के लोग आसानी से डेयरी का बिजनेस शुरू कर सकते हैं। गाँव में गाय या भैंस पालकर दूध उत्पादन करना और बेचना साथ ही दूध से बनने वाले उत्पाद जैसे दही, घी, पनीर बेचने का काम बहुत मुनाफा

वाला होता है।

शुरुआत में कम पशुओं को रखें या शुरुआत में आप आस-पास के पशुपालकों से दूध कलेक्शन करके भी काम शुरू कर सकते हैं। इसमें मुनाफा भी अच्छा है और ये हमेशा चलने वाला बिजनेस है। क्योंकि किसी भी मौसम में लोग चाय, कॉफी, दूध, घी और दही जैसी चीजों को इस्तेमाल करना बन्द नहीं करते। सरकार डेयरी उद्योग को बढ़ावा देने के लिए लोन भी दे रही है अगर आप के पास काम शुरू करने के लिए पैसे नहीं हैं तो आप सरकारी स्कीम के तहत बैंक से लोन ले कर अपना बिजनेस शुरू कर सकते हैं। इस बिजनेस में अच्छा और मोटा मुनाफा की बड़ी गुंजाइश है।

### 2. ऑर्गेनिक खेती



डेयरी के बाद ऑर्गेनिक फार्मिंग भी एक अच्छा उद्योग हो सकता है। आजकल खेतों में ज्यादा उत्पादन के लिए बहुत ज्यादा मात्रा में कीटनाशक और खाद का प्रयोग किया जा रहा है जो मिट्टी की उर्वरा शक्ति को तो खराब कर ही रहा है साथ ही हमारे स्वास्थ्य पर भी खराब इंपैक्ट पड़ रहा है। जिससे कई तरीके की खतरनाक बिमारियाँ हो रही हैं। इसलिए अब ऑर्गेनिक खेती की डिमांड बढ़ी है और लोग ऑर्गेनिक तरीके से उगाई गयी फसलों का ज्यादा इस्तेमाल कर रहे हैं। इसलिए अगर आप ऑर्गेनिक खेती करके अनाज, फल और सब्जियाँ उगाते हैं तो आप अच्छा पैसा कमा सकते हैं। क्योंकि ऑर्गेनिक फसलों की कीमत कई गुना ज्यादा होती है।

इसके लिए सबसे पहले केमिकल वाली खाद और कीटनाशक की जगह गोबर की खाद, वर्मी कम्पोस्ट, जैविक दवाइयों का उपयोग खेतों में करके फसल उगायें। ऑर्गेनिक खेती के लिए ऐसे खेतों का चुनाव करें जिसमें कम से कम 1 साल तक कीटनाशक और केमिकल खाद, यूरिया-डाई का इस्तेमाल न किया गया हो।

इससे हम लोगों को खतरनाक बीमारियों से बचा सकते हैं और आने वाली पीढ़ी के भविष्य के लिए भी ये एक अच्छा कदम हो सकता है।

सरकार जैविक खेती को मजबूरी से दे रही है बढ़ावा सरकार भी जैविक खेती को बढ़ावा दे रही है और सरकार की ओर से इसके लिए सब्सिडी और ट्रेनिंग भी

दी जा रही है। जैविक उत्पादों की इस समय मार्केट में डिमांड बहुत ज्यादा है। जिसकी वजह से सब्जियाँ, फल, अनाज, दालें और इसके अलावा भी कई तरीके की फसलें ऑर्गेनिक खेती करके उगाई जा रही हैं।

### 3. खाद और बीज की दुकान



खाद और बीज की दुकान भी गाँव में बिजनेस का एक अच्छा विकल्प हो सकता है क्योंकि खेती के लिए बीज और खाद तो हर एक किसान खरीदता ही है। इसके लिए सबसे पहले आपको कृषि विभाग से लाइसेंस लेना होगा और फिर अगर आपने सही जगह पर दुकान खोल दी तो खेती के सीजन में आप बहुत मुनाफा कमा सकते हैं। बस शुरू में पैसे अपनी जेब से लगाने होंगे ताकी दुकान में डिमांड के अनुसार सामान पर्याप्त हो। दुकान में खेती का हर जरूरी सामान रखें और फिर आस-पास के किसानों को बीज, खाद, कीटनाशक और खेती का हर सामान बेचिये।

### 4. आटा चक्की

शहरों में कई तरीके का पैकेट बंद आटा और बेसन जैसी चीजे मिल जाती हैं लेकिन गाँव में इस तरह की पैकेट बंद चीजों का चलन अभी नहीं है गाँव के लोग गेहूँ,

चना, मक्का, जौ पिसवाने चक्की जाते हैं। आप गाँव में आटा चक्की की मशीन लगाकर अच्छे पैसे कमा सकते हैं। क्योंकि किसान कभी वो चीजे बाजार से खरीद कर नहीं खाता जो वो अपने खेतों में पैदा करता है इसलिए यह हर घर की जरूरत है।

आटा चक्की से आप आटा पीस कर पैसे तो कमा ही

सकते हैं साथ ही साथ आप आटे और बेसन जैसी चीजों की पैकिंग करके अपना ब्रांड बनाकर बाजार में बेच भी सकते हैं और लाखों की कमाई कर सकते हैं।

### अच्छी रिसर्च और कड़ी मेहनत की होती है जरूरत

यह कुछ शानदार ऑप्शन हैं जिसके जरिए गाँव में रहकर मोटी कमाई की जा सकती है बशर्ते व्यापार शुरू करने से पहले अच्छी तरह से रिसर्च और कड़ी मेहनत की जरूरत होती है।

फिलहाल सरकार और व्यवस्था व्यापार करने के लिए बहुत अनुरूप है। अगर आप थोड़ा सा भी मन बनाएं तो बहुत अच्छे तरीके से अच्छी कमाई कर सकते हैं वो भी अपने परिवार और गाँव में रहकर। ऊपर बताए गए 4 विकल्प के अलावा भी कई और विकल्प मौजूद हैं जो आपको गाँव में रहकर अच्छी आमदनी दे सकते हैं।





# विश्व ऊर्जा सम्मेलन में भारत की सौर ऊर्जा को मिली वैश्विक तारीफ

**जे**नेवा की ठंडी हवा में गर्म चर्चा हो रही है। 12 अक्टूबर 2025 को विश्व ऊर्जा कांग्रेस में दुनिया के नेता इकट्ठा हुए। यहां भारत की सौर ऊर्जा की कहानी ने सबका दिल जीत लिया। भारत ने 2070 तक नेट-जीरो का वादा किया है और सौर ऊर्जा में तेजी से आगे बढ़ रहा है। प्रतिनिधियों ने कहा कि भारत का यह प्रयास न सिर्फ खुद के लिए बल्कि पूरी दुनिया के लिए मिसाल है। खासकर वैश्विक दक्षिण के देशों के लिए। यह खबर उन भारतीयों के लिए खुशी की है जो पर्यावरण की चिंता करते हैं।

## जेनेवा की सभा: भारत की सूरज की किरणें चमकीं

विश्व ऊर्जा कांग्रेस हर तीन साल में होती है। इस बार जेनेवा में 6 से 9 अक्टूबर तक चली, लेकिन 12 अक्टूबर को भी चर्चाएं जारी रहीं। यहां 18000 से ज्यादा नेता, मंत्री और विशेषज्ञ आए। भारत के सौर ऊर्जा कार्यक्रमों पर खूब बात हुई। प्रतिनिधियों ने भारत की तारीफ की कि कैसे वह साफ ऊर्जा में नेतृत्व कर रहा है।

एक पैनल डिस्कशन में अंतरराष्ट्रीय सौर गठबंधन (आईएसए) की भूमिका पर जोर दिया गया। आईएसए भारत और फ्रांस ने मिलकर शुरू किया था। अब 124 देश इसके सदस्य हैं। जेनेवा में बोला गया कि आईएसए वैश्विक दक्षिण को साफ तकनीक में आगे ले जा रहा है। भारत का 500 गीगावाट नॉन-फॉसिल ऊर्जा का लक्ष्य 2030 तक सबको प्रेरित कर रहा है।

भारत के मंत्री प्रल्हाद जोशी ने कहा, “हमारा सूरज हमें ताकत देता है।” प्रतिनिधियों ने सहमति जताई। यह तारीफ सिर्फ शब्दों की नहीं, बल्कि कार्रवाई की है। जेनेवा से लौटते हुए कई देशों ने भारत से सीखने की बात कही। यह पल भारत के सस्टेनेबल प्रयासों की वैधता साबित करता है। लेकिन सवाल यह है कि यह सफलता कैसे मिली? चलिए, आंकड़ों की बात करें।

## सौर ऊर्जा की उड़ान: आंकड़े जो बोलते हैं

भारत की सौर ऊर्जा की कहानी आंकड़ों से भरी है। सितंबर 2025 तक भारत की कुल नवीकरणीय ऊर्जा क्षमता 256 गीगावाट हो गई। इसमें सौर ऊर्जा का हिस्सा 127.3 गीगावाट है। हवा से 53.1 गीगावाट। यह दुनिया में तीसरा सबसे बड़ा सौर उत्पादक बनाता है। 2030 के लक्ष्य से पांच साल पहले ही 50 प्रतिशत नवीकरणीय क्षमता हासिल कर ली।

2014 से 2024 के बीच सौर टैरिफ 69 प्रतिशत गिर गया। अब सबसे कम बोली 2 रुपये प्रति किलोवाट घंटा है। मार्च 2025 तक कुल नवीकरणीय 220.10 गीगावाट थी, जिसमें सौर 105.65 गीगावाट। पिछले दशक में 105 गीगावाट सौर जोड़ा गया। यह वैश्विक दक्षिण में एक तिहाई हिस्सा है।

सौर पार्क, रूफटॉप पैनल और किसानों के सौर पंप ने यह संभव बनाया। अप्रैल 2025 में 224 गीगावाट नवीकरणीय पहुंची। आईईए के मुताबिक, 2050 तक सौर 30 प्रतिशत वैश्विक बिजली देगा। भारत इसमें अग्रणी है।



लेकिन यह सिर्फ बिजली नहीं, बल्कि नौकरियां भी ला रहा है। 2030 तक 1.5 मिलियन ग्रीन जॉब्स बनेंगी।

ये आंकड़े जेनेवा में दिखाए गए। प्रतिनिधियों ने कहा, “भारत ने दिखा दिया कि तेज विकास संभव है।” फिर भी, चुनौतियां हैं। जैसे ग्रिड इंफ्रास्ट्रक्चर और स्टोरेज। लेकिन ये आंकड़े उम्मीद जगाते हैं। अब देखें कि आईएसए कैसे मदद कर रहा है।

## आईएसए: सूरज का वैश्विक गठबंधन

अंतरराष्ट्रीय सौर गठबंधन की शुरुआत 2015 में पेरिस कॉप पर हुई। भारत और फ्रांस के नेतृत्व में। अब यह 124 सदस्यों वाला सबसे बड़ा ग्लोबल साउथ संगठन है। जेनेवा में आईएसए के डीजी आशीष खन्ना ने कहा, “पिछले 10 सालों में सौर क्षमता दोगुनी हुई। ज्यादातर ग्लोबल साउथ से।”

आईएसए के चार स्तंभ हैं: कैटेलेटिक फाइनांस हब, कैपेसिटी बिल्डिंग, रीजनल एंगेजमेंट और टेक्नोलॉजी रोडमैप। अफ्रीका सौर फैसिलिटी से छोटे निवेश को 10-20 गुना बढ़ाया जा रहा। स्मॉल आईलैंड डेवलपिंग स्टेट्स प्लेटफॉर्म से छोटे द्वीप देशों को मदद।

भारत में 27-30 अक्टूबर 2025 को आठवीं आईएसए असेंबली होगी। थीम: “वन सन, वन वर्ल्ड, वन ग्रिड।” यहां ईज ऑफ डूइंग सोलर 2025 और सोलर ट्रेड्स 2025 रिपोर्ट लॉन्च होंगी। जेनेवा में इनकी झलक दिखाई गई। प्रतिनिधियों ने सराहा कि आईएसए महत्वाकांक्षा से कार्रवाई की ओर बढ़ रहा।

फ्लोटिंग सोलर, एआई, ग्रीन हाइड्रोजन और एग्रीकल्चर सोलर पर फोकस। भारत ने सोलर टेक्नोलॉजी एप्लीकेशन रिसोर्स सेंटर (स्टार-सी) से 10 देशों में सेंटर बनाए। 2025 अंत तक 16 होंगे। यह वैश्विक नेतृत्व

## नेट-जीरो 2070: हरा भविष्य, मजबूत अर्थव्यवस्था

2070 तक नेट-जीरो का वादा भारत का बड़ा कदम है। जेनेवा में इसे सराहा गया क्योंकि यह जलवायु चुनौतियों से लड़ने का रास्ता है। सौर ऊर्जा से ऊर्जा सुरक्षा बढ़ेगी। आयातित ईंधन पर निर्भरता कम होगी।

इससे ट्रिलियन रुपये की बचत। पर्यावरण के लिए अच्छा, लेकिन अर्थव्यवस्था के लिए भी। सौर से ग्रीन जॉब्स बढ़ेंगी। विनिर्माण, इंस्टॉलेशन और मेंटेनेंस में लाखों रोजगार। ग्रामीण इलाकों में एग्रीवोल्टेइक्स से किसानों को फायदा। मौसम की अनिश्चितता में सौर स्थिर ऊर्जा देगा। जेनेवा में चर्चा हुई कि भारत की यह यात्रा वैश्विक मॉडल बनेगी। आईईए रिपोर्ट कहती है, भारत बिजली मांग बढ़ाने के लिए रिन्यूएबल और न्यूक्लियर पर निवेश कर रहा। लेकिन संतुलन जरूरी। फॉसिल फ्यूल अभी भी हैं, लेकिन सौर-विंड ग्रोथ डिमांड से आगे निकल गई। यह वादा सिर्फ शब्द नहीं। सोलर पावर कांग्रेस 2025 में मोदी सरकार की तारीफ हुई। मंत्री श्रीपद येस्सो नायक ने कहा, “दशक में ऐतिहासिक प्रगति।” लेकिन सवाल उठता है, आगे क्या? चुनौतियां हैं, जैसे लैंड एक्विजिशन और कनेक्टिविटी। फिर भी, यह प्रेरणा देता है। निवेश बढ़ेंगे, ग्रीन जॉब्स आएंगी।



दिखाता है। लेकिन क्या यह सिर्फ भारत का फायदा है? नहीं, पूरी दुनिया का।

## आगे की राह: चुनौतियां और नई उम्मीदें

जेनेवा की तारीफ से उत्साह है, लेकिन रास्ता आसान नहीं। भारत को 2030 तक 50 प्रतिशत रिन्यूएबल चाहिए। अभी 50 प्रतिशत हो गया, लेकिन डिमांड बढ़ रही। ईवी, कूलिंग और डेटा सेंटर से बिजली जरूरत दोगुनी। ग्रिड और स्टोरेज मजबूत करने होंगे।

चीन ने 2025 के पहले छमाही में 256 गीगावाट सौर लगाया, दुनिया से ज्यादा। भारत इससे सीख सकता।

शशि थरूर ने कहा, “चीन से प्रेरणा लें।” लेकिन भारत का मॉडल अलग: लोकल मैन्युफैक्चरिंग और सब्सिडी। आईएसए असेंबली में ये मुद्दे उठेंगे। जेनेवा ने दिखाया कि भारत वैश्विक लीडर है। निवेशकों के लिए अवसर: 1.5 ट्रिलियन डॉलर क्लाइमेट फाइनांस चाहिए 2030 तक। सोलर पार्क से ग्रीन बॉन्ड्स तक।

भारतीयों के लिए यह वैलिडेशन है। राष्ट्रीय प्रयास सही दिशा में। जलवायु चुनौतियों में ऊर्जा सुरक्षा और ग्रीन जॉब्स से मजबूत भारत। लेकिन सोचें, अगर हम और तेज चलें तो क्या? यह सूरज की किरणें हमें रास्ता दिखा रही हैं। आगे बढ़ें, साथ मिलकर।



# आश्चर्यजनक मोड़: भारत ने तालिबान, पाकिस्तान और चीन के साथ मिलकर अमेरिका को कहा 'नहीं'

**क**ल्पना कीजिए कि दुनिया की राजनीति में अचानक ऐसा मोड़ आ जाए जहां पुराने दुश्मन एक साथ खड़े हो जाएं। ठीक वही हुआ है अफगानिस्तान के बग्राम एयरबेस को लेकर। 8 अक्टूबर 2025 को भारत ने रूस, चीन, पाकिस्तान, ईरान और तालिबान के साथ मिलकर अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की योजना का विरोध किया। ट्रंप चाहते थे कि अमेरिका फिर से अफगानिस्तान में अपना पुराना एयरबेस हासिल कर ले। लेकिन इस क्षेत्र के देशों ने साफ कह दिया- अफगानिस्तान की जमीन पर कोई विदेशी सैन्य ताकत नहीं चलेगी। यह खबर भारत के लिए खास है, क्योंकि यह दिखाती है कि नई दिल्ली कैसे पड़ोसियों के साथ तालमेल बिठा रही है, जबकि अमेरिका के साथ रिश्ते भी संभाले रख रही है।

यह घटना मॉस्को में हुई अफगानिस्तान पर सलाहकारी बैठक से जुड़ी है। वहां सभी देशों ने एक संयुक्त बयान जारी किया, जिसमें कहा गया कि अफगानिस्तान या उसके आसपास किसी देश की सैन्य मौजूदगी क्षेत्र की शांति के लिए खतरा है। तालिबान ने भी साफ शब्दों में कहा कि अफगानिस्तान आजाद देश है, यहां विदेशी सैनिकों का कोई स्थान नहीं। यह विरोध सिर्फ शब्दों का नहीं, बल्कि एक बड़ी रणनीति का हिस्सा लगता है। लेकिन क्यों? और भारत इसमें क्यों कूद पड़ा?

## बग्राम की पुरानी कहानी: अमेरिका का 'सुनहरा हवाई अड्डा'

सबसे पहले, बग्राम एयरबेस को समझिए। यह अफगानिस्तान का सबसे बड़ा हवाई अड्डा है, काबुल से करीब 50 किलोमीटर दूर। दो लंबे रनवे हैं यहां- एक 3.6 किलोमीटर का और दूसरा 3 किलोमीटर का। ऊबड़-खाबड़ पहाड़ों के बीच बसा यह जगह बड़े-बड़े सैन्य विमानों के लिए परफेक्ट है। 2001 में 11 सितंबर के हमलों के बाद अमेरिका ने अफगानिस्तान पर हमला किया। तब से बग्राम अमेरिका का मुख्य सैन्य केंद्र बन गया। हजारों अमेरिकी सैनिक यहां तैनात थे। यहां तक कि 'युद्ध पर आतंक' के नाम पर कई कैदी रखे गए, जिनमें से कई सालों तक बिना मुकदमे के कैद रहे। कुछ को यातनाएं भी दी गईं।

ट्रंप ने 2020 में तालिबान से एक समझौता किया, जिसमें अमेरिका ने वादा किया कि 2021 तक सभी सैनिक हटा लेंगे। बाइडेन के समय यह पूरा हुआ, और तालिबान ने काबुल पर कब्जा कर लिया। बग्राम भी तालिबान के हाथ लग गया। लेकिन अब ट्रंप फिर राष्ट्रपति बनने के बाद कह रहे हैं कि यह गलती थी। 18 सितंबर 2025 को लंदन में उन्होंने कहा कि बग्राम चीन की सीमा से सिर्फ एक घंटे दूर है। वहां चीन के न्यूक्लियर हथियार बनाने का कारखाना है। अगर अमेरिका इसे वापस ले ले, तो चीन पर नजर रखना आसान हो जाएगा। ट्रंप ने धमकी भी दी कि अगर तालिबान बेस नहीं लौटाएंगे, तो अफगानिस्तान के साथ 'बुरे काम' होंगे।

लेकिन सच्चाई क्या है? कई अमेरिकी अधिकारी कहते हैं कि ट्रंप का दावा गलत है। चीन का कोई न्यूक्लियर कारखाना शिनजियांग में नहीं है, जो बग्राम से



इतना करीब हो। फिर भी, बग्राम की रणनीतिक अहमियत साफ है। यह मध्य एशिया के दिल में है, जहां से ईरान, पाकिस्तान, भारत सब जुड़े हैं। अगर अमेरिका यहां लौटे, तो पूरे क्षेत्र में तनाव बढ़ सकता है। सोचिए, जैसे कोई पुराना दोस्त घर में घुस आए और कहे- यह मेरा कमरा है। पड़ोसी खुश थोड़े न होंगे! यही वजह है कि क्षेत्र के देश एकजुट हो गए।

## मॉस्को का संदेश: दुश्मनों का अनोखा गठजोड़

7 अक्टूबर 2025 को मॉस्को में सातवीं 'मॉस्को फॉर्मेट कंसल्टेशन ऑन अफगानिस्तान' हुई। इसमें अफगानिस्तान, ईरान, कजाकिस्तान, चीन, किर्गिस्तान, पाकिस्तान, रूस, ताजिकिस्तान, उज्बेकिस्तान और भारत शामिल थे। बेलारूस मेहमान था। खास बात यह कि तालिबान का प्रतिनिधिमंडल पहली बार पूर्ण सदस्य के रूप में आया, विदेश मंत्री अमीर खान मुत्तकी के नेतृत्व में। रूसी विदेश मंत्री सर्गेई लावरोव और अफगानिस्तान के लिए रूसी दूत जामिर काबुलोव भी थे।

अगले दिन, 8 अक्टूबर को सभी ने संयुक्त बयान जारी किया। इसमें कहा गया- अफगानिस्तान को स्वतंत्र, एकजुट और शांतिपूर्ण देश बनाने का पूरा समर्थन। लेकिन किसी भी देश द्वारा अफगानिस्तान या उसके पड़ोसी इलाकों में सैन्य ढांचा लगाने की कोशिश अस्वीकार्य है। यह क्षेत्रीय शांति के हित में नहीं। बयान में बग्राम का नाम नहीं लिया, लेकिन सब समझ गए कि यह ट्रंप की योजना पर सीधा प्रहार है। तालिबान के मुत्तकी ने कहा, "अफगानिस्तान आजाद देश है। इतिहास गवाह है कि हम कभी विदेशी सैनिकों को स्वीकार नहीं करेंगे। हमारा फैसला वही रहेगा- अफगानिस्तान को आजाद और स्वतंत्र रखना।"

यह गठजोड़ अनोखा है। भारत और पाकिस्तान, जो हमेशा एक-दूसरे के खिलाफ खड़े रहते हैं। भारत और चीन, जिनके बीच सीमा विवाद है। रूस और अमेरिका तो पुराने प्रतिद्वंद्वी। ईरान भी अमेरिका से नफरत करता है। फिर भी, सब एक मंच पर। क्यों? क्योंकि सबको लगता है

कि अमेरिकी वापसी से अफगानिस्तान फिर युद्ध का मैदान बनेगा। आतंकवाद बढ़ेगा, शरणार्थी आएंगे, अर्थव्यवस्था डगमगाएगी। पाकिस्तान को तालिबान से पहले ही झगड़ा है, लेकिन यहां वह भारत के साथ खड़ा हो गया। चीन को अमेरिकी नजरबंदी का डर है। रूस को अमेरिकी विस्तार का। और भारत? वह तो मध्य एशिया में अपनी पहुंच बढ़ाना चाहता है। यह बैठक न सिर्फ विरोध थी, बल्कि अफगानिस्तान को क्षेत्रीय कनेक्टिविटी में जोड़ने का प्लान भी। जैसे रोड, रेलवे प्रोजेक्ट्स से व्यापार बढ़ाना।

एक्स (पूर्व ट्रिवटर) पर भी हंगामा मचा। एक यूजर ने लिखा, "ट्रंप पाकिस्तान का इस्तेमाल तालिबान को दबाने के लिए कर रहे हैं, लेकिन यह नहीं होगा। इससे तालिबान भारत, रूस और चीन के करीब आ गया। पाकिस्तान के लिए बड़ा नुकसान।" दूसरे ने कहा, "भारत, चीन और अमेरिका तालिबान को रेयर अर्थ मिनरल्स माइनिंग के लिए खुश रखना चाहते हैं, लेकिन भारत को पाकिस्तान को बाहर रखने का अतिरिक्त फायदा।" सोशल मीडिया पर बहस चल रही है कि यह ट्रंप की नाकामी है या क्षेत्रीय शक्तियों की जीत।

## भारत का साहसिक कदम: पड़ोसी पहले, या अमेरिका?

अब बात भारत की। भारत अमेरिका का पुराना साथी है। क्वाड, आई2यू2 जैसे गठबंधन हैं। लेकिन यहां भारत ने क्षेत्रीय देशों का साथ दिया। क्यों? सबसे बड़ा कारण- अफगानिस्तान की स्थिरता। भारत ने तालिबान को कभी मान्यता नहीं दी, लेकिन अब धीरे-धीरे रिश्ते सुधार रहा है। मानवीय मदद दे रहा है, प्रोजेक्ट्स चला रहा है। अगर अमेरिका लौटे, तो तालिबान कमजोर पड़ सकता है, और पाकिस्तान का प्रभाव बढ़ सकता है। भारत को यह पसंद नहीं।

भारत के लिए मध्य एशिया महत्वपूर्ण है। वहां ऊर्जा संसाधन हैं, व्यापार के रास्ते हैं। चाबहार पोर्ट के जरिए भारत अफगानिस्तान से जुड़ रहा है। अगर बग्राम पर अमेरिका का कब्जा हो, तो यह रास्ते अवरुद्ध हो सकते हैं। प्लस, आतंकवाद का खतरा। आईएसआईएस-के

जैसे ग्रुप अफगानिस्तान में सक्रिय हैं। भारत चाहता है कि क्षेत्रीय देश मिलकर आतंकवाद से लड़े। संयुक्त बयान में भी यही कहा गया- आतंकवाद विरोधी सहयोग बढ़ाएं।

फिर, तालिबान के विदेश मंत्री मुत्तकी का भारत दौरा। 9 से 16 अक्टूबर तक। यह पहला ऐसा दौरा है। संयुक्त राष्ट्र की मंजूरी मिली। इससे भारत-तालिबान के बीच सीधी बातचीत हो सकेगी। शायद मानवीय मुद्दों पर, जैसे महिलाओं की शिक्षा, लेकिन राजनीतिक भी। विपक्ष में राहुल गांधी ने आलोचना की। कहा कि मोदी सरकार महिलाओं के सम्मान में कमजोर है। लेकिन एक एक्स पोस्ट में किसी ने लिखा, "सीआईए बग्राम चाहती है ताकि चीन, भारत, ईरान पर जासूसी करे और पाकिस्तान की मदद करे। राहुल का ड्रामा इसी से जुड़ा।" भारत का यह रुख संतुलित लगता है। अमेरिका से रिश्ते खराब नहीं होंगे, लेकिन पड़ोसी देशों से तनाव कम होगा। सोचिए, अगर भारत अकेला खड़ा होता, तो पाकिस्तान मजाक उड़ाता। लेकिन अब सब साथ हैं। यह भारत की कूटनीति की ताकत दिखाता है।

भारत के विशेषज्ञ कहते हैं कि यह कदम लंबे समय के फायदे का है। अफगानिस्तान को क्षेत्रीय अर्थव्यवस्था में जोड़ना। जैसे, अंतरराष्ट्रीय उत्तर-दक्षिण परिवहन कॉरिडोर। इससे भारत का व्यापार बढ़ेगा। मानवीय सहायता जारी रखना। संयुक्त बयान में कहा गया कि अफगानिस्तान को आर्थिक एकीकरण में मदद करें। भारत पहले ही दवाइयां, अनाज भेज रहा है। यह विरोध सिर्फ नकारात्मक नहीं, सकारात्मक प्लान का हिस्सा है। लेकिन सवाल यह कि क्या यह गठबंधन टिकेगा? ट्रंप की धमकियां क्या असर डालेंगी?

## आगे का रास्ता: शांति की उम्मीद या नया तनाव?

यह घटना दक्षिण एशिया के लिए बड़ा मोड़ है। ट्रंप का जवाब अभी साफ नहीं। उन्होंने सितंबर में धमकी दी थी, लेकिन अब चुप हैं। कुछ अमेरिकी अधिकारी कहते हैं कि बग्राम वापस लेना मुश्किल है। इसके लिए 10,000 से ज्यादा सैनिक चाहिए, हवाई रक्षा प्रणाली। यह नई जंग जैसा होगा। ट्रंप शायद इसे चुनावी मुद्दा बना रहे हैं, लेकिन हकीकत में लागू करना कठिन।

क्षेत्रीय देशों के लिए फायदा साफ। पाकिस्तान को तालिबान से झगड़ा है- हाल ही में काबुल पर हवाई हमले किए। लेकिन बग्राम पर एकजुटता से पाकिस्तान को संदेश मिला कि अमेरिका का साथ न लें। चीन को राहत, क्योंकि अमेरिकी निगरानी कम होगी। रूस को खुशी, क्योंकि अमेरिका का विस्तार रुका। ईरान को भी, क्योंकि बग्राम से ईरान पर नजर रखना आसान होता।

भारत के लिए यह संतुलन का खेल है। अमेरिका से सैन्य सौदे जारी रहेंगे, लेकिन अफगानिस्तान में भारत की भूमिका मजबूत होगी। तालिबान से रिश्ते बेहतर होने से भारत को दुश्मनों पर नजर रखने में मदद मिलेगी। लेकिन चुनौतियां भी। अफगानिस्तान में महिलाओं पर पाबंदियां, आर्थिक संकट। संयुक्त राष्ट्र कहता है कि लड़कियां चार साल से स्कूल से बाहर हैं। इंटरनेट पर सेंसरशिप। भारत को इन मुद्दों पर तालिबान से बात करनी होगी।





**प्रभु कृपा दुख निवारण समागम**



BY

**Arihanta  
Industries**

- BHRINGRAJ
- AMLA
- REETHA
- SHIKAKAI

100 ML

15 ML



**ULTIMATE  
HAIR  
SOLUTION**

**NO**

ARTIFICIAL  
COLOR  
FRAGRANCE  
CHEMICAL

# KESH VARDAK SHAMPOO

The complete solution of all hair problems:

- Prevent hair fall and make hair follicle strong.
- Promote hair growth.
- Free from all artificial & harmful chemicals like., SLS.
- 100% pure ayurvedic shampoo.
- Suitable for all hair types.



**ORDER ONLINE @ :**

**amazon**

**arihanta.in**

**Arihanta Industries**